ज्ञानामृत

मई, 1984 वर्ष 19 ❋ अंक 11८ मूल्य 1.35

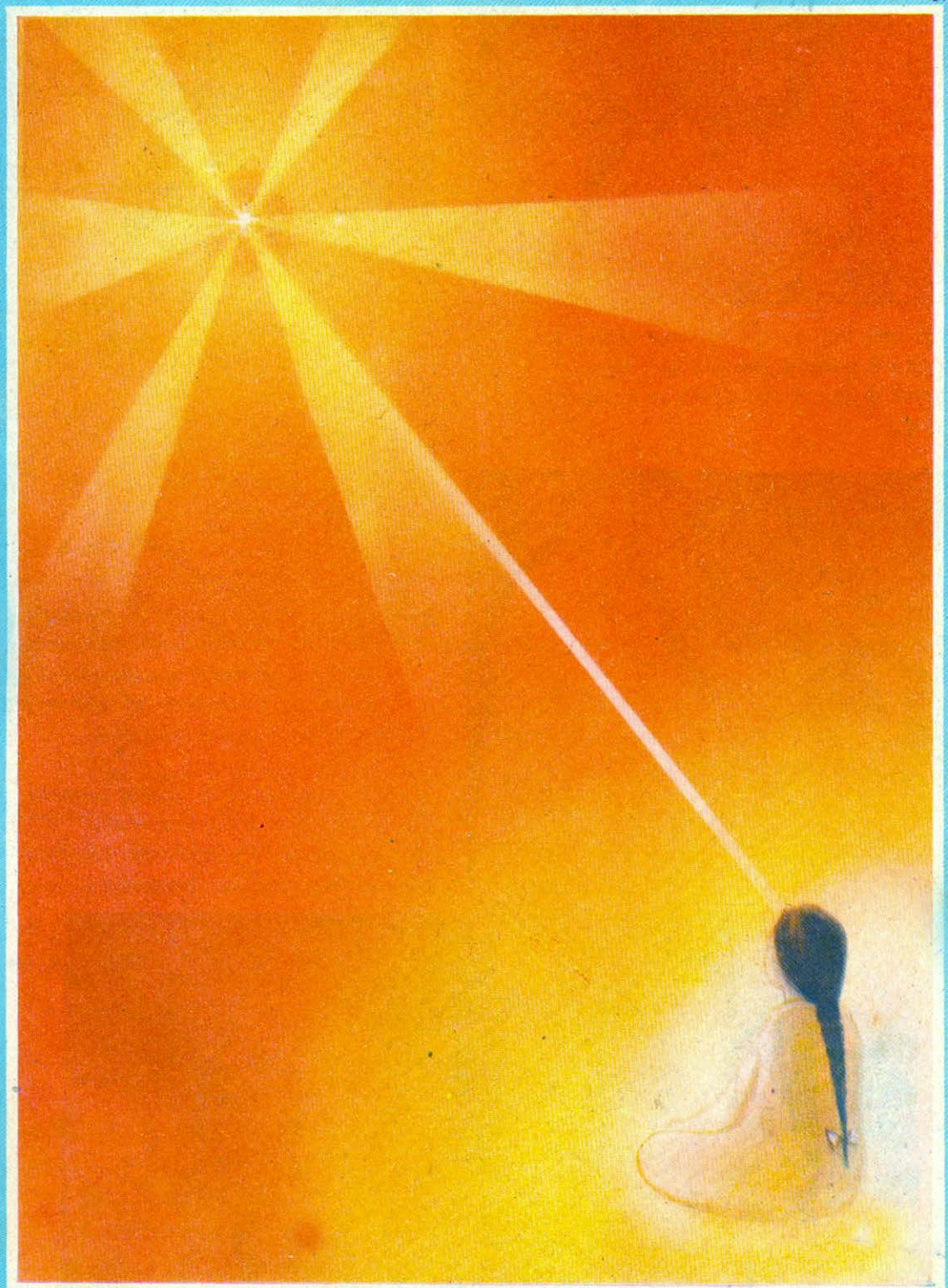

राजयोगी पवित्रता, शान्ति और आनन्द की सतत धारा से मुदित होता है। वह ऐसा अनुभव करता है कि ईश्वरीय प्रकाश शक्ति और आनन्द की किरणें उस पर उतर रही हैं। इस प्रकार, योगी के अन्तर्मन को शान्ति प्राप्त होती है और वह पवित्रता तथा शान्ति की तरंगें प्रवाहित करके समाज-सेवा के लिए निमित्त बनता है।

माउॅट आबू स्थित ब्र० कु० ई० विश्व विद्यालय के मुख्यालय में गुजरात के मुख्य मन्त्री भ्राता माधव सिंह सोलनकी जी पधारे। वे ओम शान्ति भवन में सम्बोधित करते हुए।

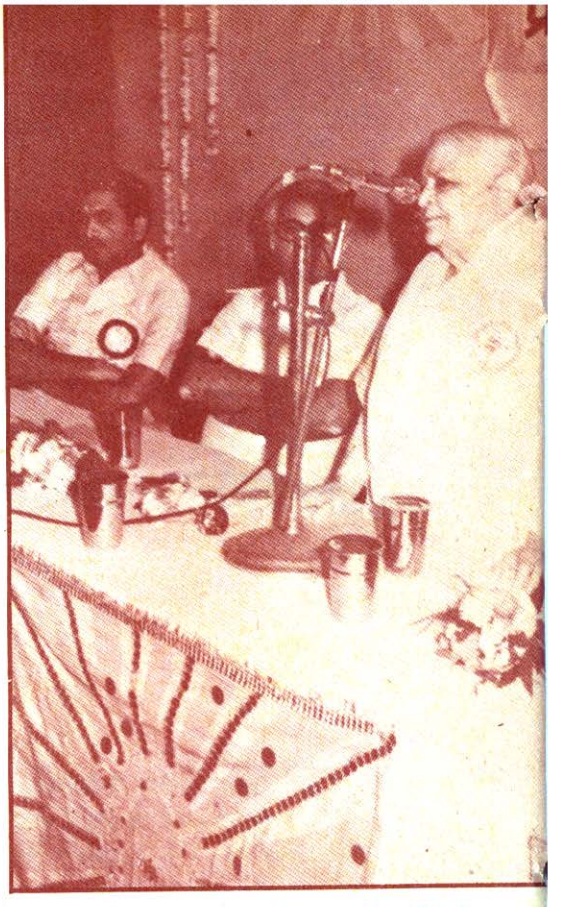

बम्बई उल्लहास नगर में आध्यात्मिक मेले के उद्घाट अवसर पर प्रवचन करती हुईं महाराष्ट्र ज़ोन प्रशासिका ब्र० कु० दादी ब्रिज इन्द्रा जी।

बैरकपुर में राजयोग प्रदर्शनी के उदघाटन अवसर पर सम्बोधित करती हुई ब्र० कु० निर्मल शान्ता जी।
उन के दाएं विराजमान हैं भ्राता बी० एन० पोद्दार, भ्राता एस० लसकर तथा मुख्याध्यापक वैल्ज़ले हाईस्कूल।

ब्र० कु० मोहिनी आबूधाबी में इंडियन सोशल सेन्टर में 'शान्ति और प्रसन्नता' विषय पर प्रवचन करते हुए।

अम्बाला छावनी में नए भवन शान्ति धाम में झण्डा लहराने के पश्चात ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी, दादी चन्द्रमणि जी तथा अन्य शिव बाबा की याद में।

सिद्धपुर में नये योग कक्ष का उद्घाटन करते हुए स्वामी प्रकाशानन्द जी, आचार्य महामण्डलेश्वर हरिद्वार। पास में विजय बहन, वेदांती बहन तथा मनोज भाई खड़े हैं।

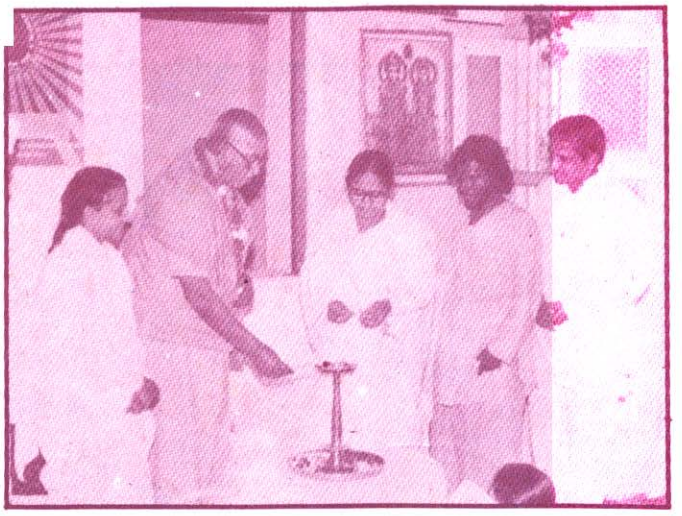

कलकता में हुए 'डाक्टर स्नेह मिलन' में सम्बोधित करती हुई ब्र० कु० दादी निर्मल शान्ता जी।

उमरेड में मानव जागृति आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन अवसर पर मंच पर दाएं से ब्र० कु० पुष्पाराणी, सावित्री ब्र० कु० उषा, डिप्टी जनरल मैनेजर वेस्टर्न एरिया कोल फ़ील्ड के भ्राता डी० जी० रायबागकर जी सब एरिया मैनेजर उमरेड वेस्टर्न एरिया कोल फ़ील्ड के भ्राता एम० एम० सप्रा जी तथा ब्र० कु० रत्नमाला विराजमान हैं।

जालन्धर में नवनिर्मित आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्घाटन ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी दीप प्रज्जवलित करके कर रही हैं।

Regd No. 10563/65-D(E)-70

नेरोबी के वकील व पंचायती निर्णय ट्रिब्युनल के अध्यक्ष तथा संयुक्त राष्ट्र संघ में मानवीय अधिकारों के विशेषज्ञ भ्राता वाको, माउंट आबू में एक दिन के लिये पधारे। वे ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी से ईश्वरीय सौगात लेते हुए।

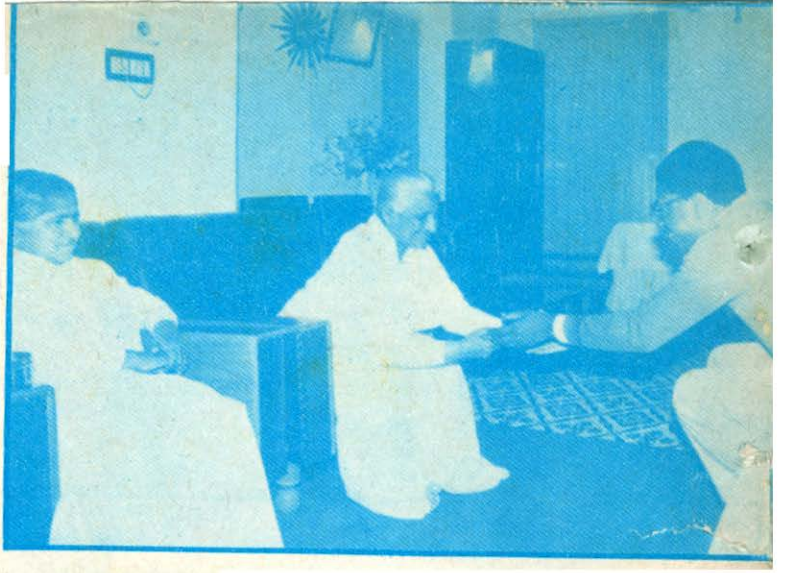

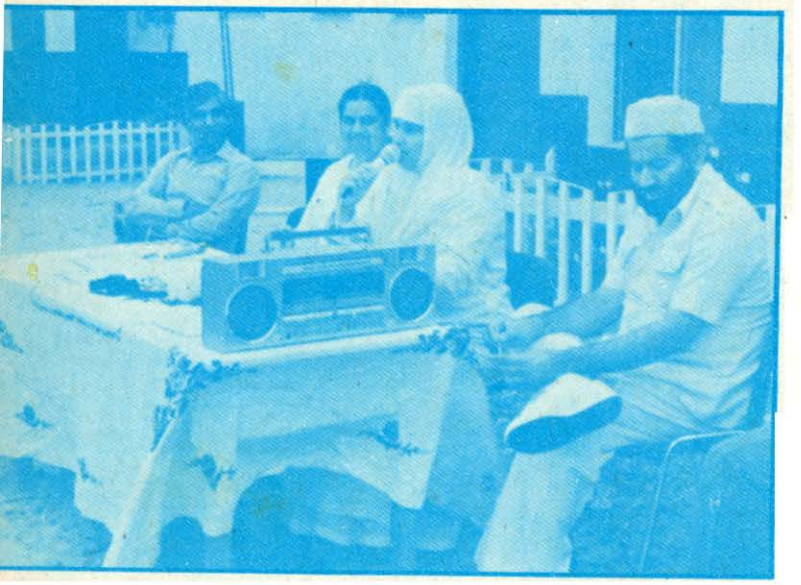

ब्र० कु० मोहिनी ने दुबई में भिन्न–2 स्थानों पर प्रवचन किए। बहन सिद्दकी प्रिन्सीपल सिद्दकी इसलामिक इंगलिश स्कूल उन्हें धन्यवाद देते हुए। उनके बाएं भ्राता जे० एम० सिद्दकी अध्यक्ष स्कूल तथा दाएं में ब्र० कु० मोहिनी तथा भ्राता भारत गजरिया बैठे हैं।

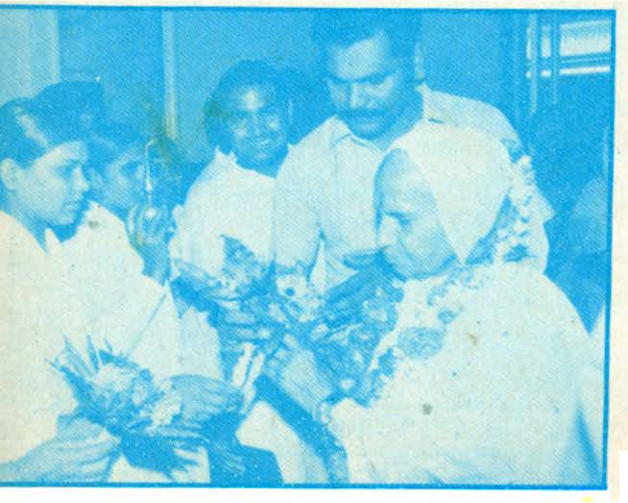

श्रीमति प्रधानकौर ,भारत के राष्ट्रपति की पत्नी का आबू रोड में वहां के ब्र० कु० भाई बहिन स्वागत कर रहे हैं।

जूनागढ. में सेवा केन्द्र के लिये भवन का मूहूर्त करती हुई ब्र० कु० ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी।

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय			पृष्ठ
१.	सदा ध्यान रखें	...	...	१
२.	ईश्वरीय स्मृति में सहज स्थिति (सम्पादकीय)	...	...	२
३.	आँख (कविता)	...	...	५
४.	राजयोग के चमत्कार	...	...	६
५.	कलियुग के अन्तिम चरण के चिह्न	...	...	१०
६.	फरिश्ता (कविता)	...	...	११
७.	सारे जहाँ से अच्छा (कविता)	...	...	११
८.	सत्संग तारे, कुसंग बोड़े	...	...	१२
९.	प्रत्यक्षता	...	...	१३
१०.	सेवा समाचार चित्रों में	...	...	१५
११.	उपरामचित्त	...	...	१८
१२.	गृहस्थ में ब्रह्मचर्य सम्भव	...	...	१९
१३.	इन्दौर में अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र तथा जीवन दर्शन आध्यात्मिक संग्रहालय	...	...	२१
१४.	विजय का नगारा	...	...	२४
१५.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	...	...	२९
१६.	त्रिकुटि साधन (कविता)	...	...	३२

ब्र० कु० जानकी दादी की क्लास के कुछ अंश

सदा ध्यान रखें

कि हम कभी भी किसी की आलोचना न करें। छोटे, बड़ों को सम्मान दें। आलोचना का संस्कार हमारी सारी पढ़ाई की मेहनत को खत्म कर देता है। रूहानी रूहाब समाप्त हो जाता है। पर-चिन्तन से समय बरबाद होता है, जो आलोचना करता रहता है उसमें अहंकार प्रवेश कर जाता है। चार्ट पर ध्यान रखने वाला कभी किसी की आलोचना नहीं करेगा। दैवी संगठन, परिवार से पूरा सम्बन्ध रखें। आलोचक का सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है। सदा चढ़ती कला के लिये इस आलोचना के संस्कार को सदा-सदा के लिये समाप्त करो।

सूचना

प्रिय बहनो और भाइयो,

ज्ञानामृत का १९वां वर्ष जून मास में समाप्त हो रहा है। जुलाई मास का ज्ञानामृत २० वें वर्ष का प्रथम अंक होगा। आप सभी से निवेदन है कि अपने-अपने सेवाकेन्द्र के ज्ञानामृत के सदस्यों की संख्या १० जून तक अवश्य भेज देवें। ज्ञानामृत का शुल्क निम्नलिखित है—

वार्षिक शुल्क—१६ रुपये
अर्द्ध वार्षिक शुल्क—८ रुपये
प्रति अंक—१.३५
विदेशों के लिये—१०० रुपये

व्यवस्थापक
ज्ञानामृत
बी ९/१९ कृष्णानगर
दिल्ली-५१

ईश्वरीय स्मृति में सहज स्थिति

हमारे आध्यात्मिक पुरुषार्थ में ईश्वरीय स्मृति को विशेष स्थान प्राप्त है। हमारी दिनचर्या का आदि और अन्त भी ईश्वरीय स्मृति से होता है। अपने सभी विधि-विधानों में हम ईश्वरीय स्मृति को प्राथमिकता देते हैं। बाबा ने तो यहाँ तक कहा है कि खाते-पीते, चलते-फिरते, सभी कार्य करते हुए ईश्वरीय स्मृति में हमारी स्थिति बनी रहनी चाहिए, अर्थात कर्म करते भी हमारा योग अटूट होना चाहिए। प्रश्न उठता है कि कर्म करते हुए भी ईश्वरीय स्मृति बनी रहे—इसके लिए क्या युक्तियाँ हैं ?

कर्म का सम्बन्ध प्रयोजन से

ध्यान देने से हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि जब भी हम कोई कर्म कर रहे होते हैं तब उसे करने के लक्ष्य की स्मृति हमारी बुद्धि में बनी रहती है। कोई व्यक्ति कालेज में पढ़ रहा हो तो उसके मन में अपने इस उद्देश्य (Aim and object) की स्मृति तो रहती ही है कि उसे यह पढ़ाई पढ़कर डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, सेक्रेटरी आदि बनना है। मन में किसी प्रयोजन को लिए बिना तो कोई व्यक्ति कोई कर्म कर ही नहीं सकता और सभी कार्य किसी-न-किसी प्रकार की सुख और शान्ति अथवा पद और प्रतिष्ठा की प्राप्ति के लिए ही किये जाते हैं। अत: बाबा ने हमें यह लक्ष्य दे दिया है कि पतित से पावन बनने के लिए, मनुष्य से देव-पद प्राप्त करने के लिए अथवा मुक्ति और जीवन्मुक्ति की उपलब्धि के लिए हम यह पढ़ाई पढ़ रहे हैं। हमारी यह पढ़ाई केवल उतने समय के लिए नहीं होती जितना समय कि हम ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में पढ़ रहे होते हैं बल्कि दिन-भर में कर्म करते हुए भी अपनी स्थिति को उच्च बनाये रखना हमारी पढ़ाई का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। हममें से जब कोई किसी दफ्तर में या दुकान पर, न्यायालय में या घर पर भी काम कर रहा होता है तो भी हमारी पढ़ाई साथ-साथ चल रही होती है। अत: लौकिक कार्य करते समय यदि हमें अलौकिक विद्यार्थी-जीवन और साथ-साथ प्रयोजन की भी याद रहे तो हमारी ईश्वरीय स्मृति बनी रह सकती है क्योंकि हमें यह पढ़ाई पढ़ाने वाला स्वयं शिव बाबा है जिसकी ही याद में हमें रहना है। इसीलिए बाबा ने कहा है कि लौकिक कार्य करते हुए भी अलौकिक सेवा साथ-साथ करो। स्वयं को शिव बाबा का संदेशवाहक अथवा शान्तिदूत समझो। यदि लौकिक कर्त्तव्य के साथ-साथ हमें अपना अलौकिक प्रयोजन भी याद रहेगा तो ईश्वरीय स्मृति में हमारी स्थिति बनी रहेगी।

हम ऊपर कह आये हैं कि लक्ष्य स्मरण हुए बिना मनुष्य कोई भी कार्य नहीं करता। लक्ष्य और प्राप्ति सदा ही मनुष्य को कार्य के लिए प्रेरित करते हैं। परन्तु कठिनाई यह है कि मनुष्य को तात्कालिक प्राप्ति और तात्कालिक उद्देश्य ही प्राय: याद रहते हैं। वह यह याद रखता है कि इस काम को करने से उसे कितने पैसे प्राप्त होंगे अथवा क्या पद प्राप्त होगा और उससे उसका क्या प्रयोजन सिद्ध होगा। अब हमें केवल यह करना है कि हम यह याद रखें कि ये प्राप्तियाँ तो केवल इस जीवन को बनाए रखने के लिए हैं परन्तु इस जीवन का जो लक्ष्य अथवा प्रयोजन है, वह तो परमपिता परमात्मा से मुक्ति और जीवन्मुक्ति रूप पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति है। अत: लक्ष्य एवं प्रयोजन में केवल इतना-सा मार्गान्तरीकरण, संशोधन अथवा परिवर्धन (Addition) करने से हमारे लिए निरन्तर स्मृति सहज हो सकती है। जब हम केवल लौकिक उद्देश्य अथवा लक्ष्य को सामने रखते हैं तब हमें न अपना विद्यार्थी जीवन, न कर्त्तव्य और न ही अलौकिक लक्ष्य याद रहता है। इसका परिणाम यह होता है कि हमें शिव बाबा की विस्मृति हो जाती है।

हम जिसका, जिसके लिए और जिसके निरीक्षण में कार्य करते हैं, उसकी भी हमें याद रहती है

हम यदि अपने व्यावहारिक जीवन पर दृष्टि डालें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि जिसका जो कार्याधिकारी (Boss) हो, या जिसका कोई कार्यकर्त्ता हो, उसकी भी याद उसे स्वाभाविक रूप से रहती है। एक सरकारी कर्मचारी को यह हमेशा याद रहता है कि "मैं सरकार का कार्यकर्त्ता हूँ। मैं फलाँ मन्त्रालय के फलाँ सचिव (Secretary) का टाइपिस्ट हूँ आदि।" इसी प्रकार, अपने साथ कार्य करने वाले (Colleagues) की भी उसे याद रहती है। अब यदि हमें यह याद रहे कि हम शिव बाबा की सेवा पर उपस्थित हैं और कि वही करन-करावनहार है और कि हम उसी के कार्य में निमित्त, नियुक्त हैं, वही हमारा सेठ, हमारा मालिक अथवा हमारा कार्याधिकारी है तो हमें उसकी स्मृति बनी रह सकती है। शिव बाबा ने तो हमें यह भी बताया है कि "मैं हर समय आपका साथी (Colleague) सहकारी (Co-worker) भी हूँ।" अत: जैसे हमें अपने कार्यालय में कार्य करने वाले अन्य सहयोगियों व कार्याधिकारियों की चेतना रहती है, वैसे ही यदि शिव बाबा को हम प्रथम सहयोगी व कार्याधिकारी के रूप में स्थान दें तो सहज रूप से हमारे मन में ईश्वरीय स्मृति बनी रह सकती है।

कार्यालय में हमारे साथ जो काम करते हैं, उनमें से आज कौन-कौन आये हैं, इस पर हमारा ध्यान जाता है और जो नहीं आते अथवा अनुपस्थित होते हैं, उनकी ओर भी ध्यान जाता है और किसी के पूछने पर हम बता देते हैं कि अमुक व्यक्ति आया है या नहीं अथवा इस समय है या नहीं। गोया उसकी उपस्थिति और अनुपस्थिति की चेतना बनी रहती है। इसी प्रकार यदि हमें यह स्मरण रहे कि शिव बाबा भी हमारे साथी हैं, सहायक एवं सहयोगी हैं, सहकारी और सहानुभूतिकारी हैं तो उनकी स्मृति भी हमारे मन में बनी रह सकती है। इसलिए ही शिव बाबा ने हमें कहा है कि हम एक को करनकरावनहार मानते हुए और अपने को निमित्त, प्रन्यासी (trustee) मानते हुए कर्म करें। सहज याद की यही युक्ति है कि ये समझो कि हम बाबा की श्रीमत अथवा निर्देश के अनुसार कार्य कर रहे हैं। इस तरह से लौकिक कार्य में भी अलौकिकता आ जाएगी और रूहानी बाप की याद बनी रहेगी।

जब हम लौकिक कार्य को अपना मानकर, उसमें स्वयं को निमित्त न जानकर अथवा प्रन्यासी न समझ कर कर्म में प्रवृत्त होते हैं, तब शिव बाबा की याद भूल जाती है।

स्मृति और प्रवृत्ति का सम्बन्ध

कार्य करते समय मनुष्य को जो बीच-बीच में इधर-उधर के संकल्प आते हैं, उनमें भी किसी-न-किसी सम्बन्ध से, किसी-न-किसी व्यक्ति की याद समाई होती है। स्मृति के बिना प्रवृत्ति हो ही नहीं सकती। सम्बन्ध न हो तो मनुष्य का मन स्वत: ही एक स्थान पर बंधा रहेगा। स्मृति ही मनुष्य की वृत्ति की उत्पादक है। जब हम कहते हैं कि मनुष्य का मन चंचल है, उसका वास्तव में भाव यही होता है कि मन कभी एक सम्बन्धी की ओर, कभी दूसरे सम्बन्धी की ओर तो कभी तीसरे सम्बन्धी की ओर जाता है। मन का संकल्प किसी-न-किसी सम्बन्ध का सहचर ही हुआ करता है। इसलिए यदि हम आत्मा के नाते से परमात्मा ही के साथ अपने सर्व सम्बन्ध मानें तो हमें उस एक परमपिता की याद आती रहेगी वर्ना यह निश्चित है कि दूसरे-दूसरे दैहिक सम्बन्धों की याद आएगी। किसी भी सम्बन्ध या सम्बन्धी की याद न आये, यह हो ही नहीं सकता क्योंकि मन बिना सम्बन्ध के होता ही नहीं। अत: आत्मा के सर्व सम्बन्ध परमात्मा के साथ मानकर चलना ही सहज स्मृति का साधन है और परमात्मा के साथ हमारे सभी सम्बन्ध तभी याद आ सकते हैं जब हम पहले स्वयं आत्मा के निश्चय में स्थित हों। आत्मा को भूल देह-स्थिति में आ जाने पर दैहिक सम्बन्धों की याद बनी रहती है और परमात्मा रूपी सर्व सम्बन्धी की याद नहीं आती। अत: "त्वमेव माता च पिता त्वमेव..." इस श्लोक के सार की स्मति कर्मयोगी के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

सहचर्य के नियम

कार्य करते समय हमें परमात्मा की याद रहे,

इसके लिए हमें सहचर्य के नियम का थोड़ा ज्ञान होना चाहिए। अनुभव से यह सिद्ध होता है कि कुछ चीज़ों का परस्पर ऐसा सम्बन्ध होता है कि एक से दूसरे की याद सहज ही आ जाती है। इस बात को ख्याल में रखने से भी हम ईश्वरीय स्मृति में स्थित हो सकते हैं।

(i) **कारण और कार्य सम्बन्ध**—जब हम किसी व्यक्ति को लड़खड़ाते हुए देखते हैं तो हमें तुरन्त इस बात का ख्याल आता है कि शायद इसने अधिक मद्यपान कर रखा है। जब हमें यह मालूम होता है कि अमुक व्यक्ति को मलेरिया है तो हमें यह विचार आता है कि उसको किसी मच्छर ने काटा होगा। इसी प्रकार का सम्बन्ध रचयिता और रचना में भी हुआ करता है। चाहे वह रचना किसी वस्तु की हो या वाद (Theory) की। उदाहरण के तौर पर मकान की अच्छी बनावट की चर्चा के समय उसके आर्चिटेक्ट (Architect) अथवा मिस्त्री के अच्छे होने की कल्पना हम करते हैं। इसी प्रकार गुरुत्वाकर्षण की जब चर्चा होती है तो इस सिद्धान्त के प्रस्थापक, न्यूटन की याद हमें बरबस हो आती है। अतः दिन-भर में जब हम किन्हीं भवनों को देखते हैं, किसी नगर का विचार करते हैं, किसी सत्यता की चर्चा करते हैं तो हमारे मन में शिव बाबा की याद इस सहचर्य के नियम से आ जानी चाहिए क्योंकि शिव बाबा परमसत्य सिद्धान्तों के स्थापक हैं और सतयुगी देव नगरी अथवा स्वर्ण पुरी में ले जाने के निमित्त कारण हैं। जब कभी हम श्री लक्ष्मी श्री नारायण, श्री राधे श्री कृष्ण, श्री सीता श्री राम आदि की प्रतिमा अथवा चित्र देखते हैं तो इस सुन्दर रचना के अति सुन्दर रचयिता की याद हमारे मन में उभर आनी चाहिए। जैसे वृक्ष रूपी रचना को देखकर बीज रूपी रचयिता का ख्याल आता है ऐसे ही सारा दिन हमारी आंखों के सामने जो विश्व-वृक्ष रहता है, उसको देखते हुए हमें उसके रचयिता की भी याद सहज रूप से आनी चाहिए।

(ii) **स्थान के कारण सहचर्य**—दिल्ली का नाम लेते ही हमें लाल किला, जन्तर-मन्तर या इण्डिया गेट की याद हो आती है। अथवा यों कहें कि इन यादगारों का नाम सुनते ही हमें दिल्ली की याद हो आती है। कोई ताजमहल का नाम लेता है तो हमारी बुद्धि में तुरन्त आगरा शहर का ख्याल आ जाता है। तो स्थान और वहां की यादगारों का सहचर्य है अर्थात् एक की याद से दूसरे की याद स्वतः हो आती है। इसी प्रकार, स्थान से वहाँ के प्रसिद्ध व्यक्तियों की भी याद आती है। उदाहरण के तौर पर भारत का नाम लेते ही विदेशियों को महात्मा गाँधी की याद हो आती है और प्रेज़ीडेन्ट रीगन का नाम लेते ही लोगों को अमरीका की याद आ जाती है। इसी प्रकार जब हम ऊपर, ऊँचा, परमधाम, ब्रह्मलोक, इत्यादि का नाम लेते हैं तो उससे हमें शिव बाबा की स्मृति सहज हो आनी चाहिए।

कई बार ऐसा भी होता है कि हमें भारत के कारण महात्मा गाँधी की स्मृति आती है और महात्मा गाँधी की स्मृति के कारण जवाहर लाल नेहरू की स्मृति आती है और नेहरू जी की स्मृति के कारण हमें इन्दिरा गाँधी की स्मृति आती है और इन्दिरा जी की स्मृति के कारण हमें राजीव गाँधी, संजय गाँधी और मेनका गाँधी की स्मति हो आती है क्योंकि ये एक प्रकार से सहचारी हैं। इसी प्रकार जब हम किसी ब्रह्माकुमार या ब्र० कु० को देखते हैं तो हमें पिता श्री और मातेश्वरी की स्मृति और उनकी स्मृति से शिव बाबा की स्मृति हो आनी चाहिए। जैसे किसी अंग्रेज को देखने से इंग्लैण्ड की और इंग्लैण्ड से वहाँ की महारानी की याद हो आती है इसी प्रकार आत्मिक दृष्टि से देखने पर परमधाम की व परमधाम की स्मृति से शिव बाबा की स्मृति हो आना स्वाभाविक है।

(iii) **सादृश्य का नियम**—एक नाम से भी किसी दूसरे वैसे नाम वाले की याद हो आती है। जवाहर लाल नाम से जवाहर लाल नेहरू की याद हो आती है। इसी प्रकार शिव, अमरनाथ, सोमप्रकाश, त्रिलोकीनाथ आदि-आदि नाम सुनकर भी शिव बाबा की याद आना स्वाभाविक है।

गुणों का साम्य होने से भी एक के गुणों को सुनकर दूसरे गुणी की याद आ जाती है। नगर-पिता (City Father) युग प्रवर्त्तक, शान्ति स्थापक,

प्रेम-मूर्ति आदि महिमा सूचक शब्द सुनकर परम-पिता परमात्मा की याद सहज और स्वाभाविक रूप से हो आती है।

इसी तरह सम्बन्ध वाचक नाम जैसे कि पिता, माता, सखा, मीत, सहायक, शिक्षक, गुरू आदि को सुनकर परमात्मा शिव, जिनके साथ ही आत्मा के ये सर्व सम्बन्ध हैं, की याद उभर आती है। और कार्य व्यवहार में रहते हुए हम इनमें से किसी-न-किसी सम्बन्ध से ही तो कार्य करते हैं।

(iv) **विरोधी अथवा विपरीत की स्मृति का नियम**—किसी बीमार आदमी को देखकर भी डाक्टर की याद आती है। चोर का नाम सुनते ही पुलिस का ख्याल आता है। अन्धेरा होने पर प्रकाश स्मरण हो आता है। कड़ुवा स्वाद मीठे की याद दिलाता है। इसी प्रकार संसार में दुःख देखने पर सुखदाता परमात्मा की, अज्ञानान्धकार देखने पर ज्ञान-प्रकाश देने वाले प्रभु की, पतन महसूस करते हुए पावन कर्त्ता परमेश्वर की, धर्म-ग्लानि महसूस करते हुए सत्धर्म स्थापक गीता के भगवान की, बन्धन और दुःख के वातावरण को पाकर इससे छुड़ाने वाले परमपिता परमात्मा शिव की याद आनी ही चाहिए।

(v) **समय के सहचर्य का नियम और अनुक्रम का नियम**—कोई विशेष तिथि आने पर उस दिन जन्म लेने वाले की याद आ जाती है। गर्मी आने पर आम की याद हो आती है अथवा इसके बाद आँधी और वर्षा का अनुक्रम याद हो आता है। प्रातः ५ बजने पर अनुक्रम के नियम से सूर्योदय का संकल्प आता है। इसी प्रकार कलियुग के अन्त के लक्षण देखकर, विनाश की सामग्री देखकर, पतन की पराकाष्ठा देखकर, चरित्र की भ्रष्टता जानकर परमात्मा की याद आनी ही नहीं बल्कि सतानी चाहिए।

संक्षेप में हम यों कहें कि योग का अर्थ 'जोड़ना' (to add) मानते हुए जब हम अपने **प्रयोजन** में मुक्ति और जीवन्मुक्ति नामक प्रयोजन जोड़ते हैं और जब सब सम्बन्धों में परमात्मा का नाम भी सर्व सम्बन्धी के रूप में जोड़ देते हैं, तभी हमारा योग भी जुट सकता है। सम्बन्ध और प्रयोजन को जोड़ने के बिना योग भी नहीं लग सकता और सहचर्य के नियम को अपनाये बिना सहज योगी अथवा कर्म योगी भी नहीं बना जा सकता।

जगदीश

कविता

आँख

लेखक—रमाकांत तिवारी, खण्डवा

एक दिन कहा बाबा से
ये आँख देती है बहुत धोखा
मंजिल पर पहुँचने का
गंवाया है बहुत मौका
चल रहे पुरुषार्थ में आड़े आती है
नजदीक मंजिल के आते-आते ढकेल देती है
मिलने से पहले आपके
ये अच्छी लगती थी।
शुक्रिया अदा करने की इच्छा करती थी
लेकिन अब ! जबकि ये दुश्मन बनी है
नाक में दम किये है
और सब तो अच्छे हैं
कहना सुनते हैं
पर ये कमबख्त·····।
तब बाबा बोले—मीठे बच्चे !
मत होओ हैरान
इस आँख के चक्कर में
मत होओ परेशान
इस ड्रामा में ये सब होना है
आखिर इसे परास्त होना है
बिना पुरुषार्थ के करेंगे पास
तो सब कहेंगे नकल से हुआ पास
इसलिए श्रीमत रूपी पुस्तक पढ़ते रहो
नकल की झंझट से बचे रहो
विजय माया पर पाते रहो
कल्प पहले की तरह अपने
ऊँचे पद पर आते रहो !!

राजयोग के चमत्कार

(एक सत्य घटना)

ब्र० कु० श्याम पचौरी, एम० ए०, सिकन्दराराऊ

यह संसार चमत्कारों से भरा पड़ा है। कहावत भी मशहूर है कि चमत्कार को सभी नमस्कार करते हैं। विज्ञान के चमत्कारों ने तो मनुष्य को इतना चमत्कारित कर दिया है कि वह दीवाना होकर आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व को ही भुला बैठा है। बाह्य चमत्कारों की चमक ऐसी लुभावनी है कि मानव अपनी आन्तरिक चमक दमक को बिल्कुल भूलता जा रहा है। कहना न होगा कि ये चमत्कार आज के चमत्कृत मानव को बजाय सुख, शांति, पवित्रता प्रदान करने के और ही दुःख अशांति कलेश पैदा कर रहे हैं।

एक चमत्कारी साधू भभूत, घड़ी, वस्तुएं हवा में हाथ हिलाकर ला देता है, दूसरा चमत्कारी पायलट बाबा तीन दिन तक भू समाधि या जल समाधि लगाकर मनुष्यात्माओं को चमत्कृत करता है। अनेक लोग चमत्कारी कार्य करके जनता की भावनाओं को उद्वेलित करके बेचैनी पैदा कर रहे हैं।

परन्तु सबसे बड़ा चमत्कार तो कोई मनुष्यात्मा जानता ही नहीं है वह ईश्वरीय चमत्कार तो स्वयं परमात्मा ही आकर दिखाता है। यह कितना बड़ा चमत्कार है कि इतने बड़े शरीर में एक ज्योतिबिन्दु आत्मा विराजमान है जो सारे शरीर का नियंत्रण तो कर ही रही है साथ ही अपनी सूक्ष्म शक्ति-बुद्धि के द्वारा विज्ञान के इतने सारे अनुसंधान करके यह आत्मा प्रकृति की शक्तियों पर धड़ाधड़ विजय प्राप्त करती जा रही है। यह आत्मा का ही चमत्कार है कि राकेश शर्मा आज प्रथम भारतीय व्योम पुत्र कहलाये हैं क्योंकि जो भी विज्ञान की बारीकियां हैं उनका विश्लेषण तो आत्मा ही करती है। शरीर में भृकुटी के बीच स्थित यह आत्मा यदि शरीर से निकल जाय तो शरीर कुछ भी नहीं कर सकता।

चमत्कारों ने जहां मनुष्य को भौतिक सुख सुविधायें दी हैं वहां उसकी आन्तरिक शांति,आनन्द, प्रेम, पवित्रता को नष्ट कर दिया गया है। प्रेम एवं शांति की प्यास में हरेक मानव मछली की तरह छटपटा रहा है। एक पल के लिये भी उसके मन में शांति नहीं है। चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ है, अनन्त की खोज करने वाले मानव को अपना आदि अन्त कुछ पता ही नहीं कि मैं स्वयं कौन हूं, कहां से आया हूं ? कहां जाना है ? यह पुनरावृत होने वाला सृष्टि ड्रामा क्या है, इसका आदि-मध्य अंत, भूत, भविष्य, वर्तमान क्या है ? परमात्मा क्या है ? कौन है ? कहां रहता है ? क्या करता है ? क्या नहीं करता है ? प्रकृति क्या है ? प्रकृति, आत्मा, परमात्मा का आपस में क्या सम्बन्ध है—इन सब बातों का ज्ञान हो जाना एवं तदनुसार उसमें अनुभूतियां प्राप्त करके स्थित हो जाना ही राजयोग का चमत्कार है। **विज्ञान वेत्ता अपने व्योमयान में सूर्य चांद तारों की आकाश मण्डली दुनिया तक ही पहुंच पाता है लेकिन राजयोगी सूर्य चांद तारों से भी पार अपने बुद्धियोग के व्योमयान में बैठकर परमधाम, शांतिधाम की सैर करता मिनटों में बैकुंठ की राजधानी में पहुंच जाता है—यह कल्पना नहीं, सत्य है। अनुभव की कसौटी पर कसा गया स्वयं अनुभूत प्रयोग है।**

योग एक विज्ञान है यह सभी स्वीकार करते हैं। उनमें भी राजयोग सभी योगों में सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि राजयोग के अभ्यास से समेटने की शक्ति, सहनशक्ति, समाने की शक्ति, परखने की शक्ति, निर्णय शक्ति, सामना करने की शक्ति, सहयोग-शक्ति एवं सकीर्ण विस्तीर्ण शक्ति रूपी अष्ट शक्तियों की प्राप्ति होती है। और यह निर्विवाद सत्य है कि विश्व की सभी शक्तियां इन्हीं शक्तियों में समाहित है। अतः जिस व्यक्ति के पास यह सब शक्तियां हैं वही व्यक्ति जीवन संग्राम में कुशल अभिनेता, नेता, या प्रणेता बन जाता है, उसके लिये

कोई वस्तु अप्राप्त नहीं रह जाती। इसका ज्वलंत उदाहरण वैकुण्ठ की दुनिया में श्री लक्ष्मी नारायण का राज्य है। जिनके वैभव का वर्णन आज भी रोमांचित कर देता है, जहां आटोमेटिक पुष्पक विमान थे। प्रकृति दासी थी···

राजयोग के अभ्यास से प्राप्त शक्तियों का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करने से जो चमत्कार देखने को मिलते हैं उनकी कुछ अविस्मरणीय सत्य घटनायें पाठकों के सामने रखते हैं कि कठिन परीक्षाओं के समय राजयोग से प्राप्त शक्तियों ने कितना चमत्कारी प्रभाव दिखाया एवं जीवन रक्षा तक की।

घटना सन् १९६६ की है उस समय लेखक उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले में वांगरमऊ नामक ब्लाक में शासकीय सेवा में अधिकारी था। यू० पी० के कुछ ज़िले अपराध ग्रस्त हैं उनमें से एक ज़िला उन्नाव भी है। चोरी, डकैती, हत्यायें यहां सामान्य बातें हैं। गंगा नदी यहां से होकर कानपुर ज़िले को जाती है। किसी शासकीय कार्य से लेखक को क्षेत्र भ्रमण हेतु जाना पड़ा। चूंकि सड़क मार्ग नहीं था, कच्चा रास्ता था, आगे नाव से गंगा नदी पार करके दूसरी तरफ जाना आना होता था। अतः अपने सहायक को साथ लेकर दो साइकिलों से हम लोग नाव से नदी पार करके अपने भ्रमण क्षेत्र में चले गये। लौटते समय सूरज छुप गया था, घाट पर नाविक नाव लिये खड़ा था। हम दोनों के अलावा अन्य कोई सवारी नाव में बैठने वाली नहीं थी। अतः नाविक ने केवल हम दोनों के लिये नाव ले जाने का पूरी नाव का किराया मांगा। हम लोग सहर्ष तैयार हो गये क्योंकि रात्रि के समय और कोई उपाय नहीं था। वर्षा के मौसम की बाढ़ युक्त गंगा की धारा में नाविक ने नाव खेना शुरू किया और जब नदी के बीच में पहुंचे तो नाविक ने नाव को रोक दिया। नाविक ललचाई निगाहों से मेरे वैग की तरफ देख रहा था। बीच भंवर में नाव को खड़ा देखकर मेरा सहायक घबराने लगा। नाविक का रूप आक्रामक होता जा रहा था तुरंत ही मैंने स्वस्थिति में स्थिति होकर एक सेकेण्ड में अपना बुद्धियोग परमपिता परमात्मा कल्याणकारी शिव बाबा के साथ जोड़ा। एक अद्भुत निर्णय शक्ति प्राप्त हुई, मैंने अपना वैग खोलकर नाव में उलट दिया। उसमें से सरकारी कागजात एवं दवायें आदि निकल पड़ीं। मैंने कृत्रिम गुस्सा करते हुए अपने सहायक को डांटना शुरू किया कि तुम कितने मूर्ख एवं लापरवाह हो, अमुक रजिस्टर तो गांव में ही छोड़ आये सवेरे लौटकर उस गांव में जाना और लेकर आना। उस नाविक से कहा, देखा नाविक यह कितना लापरवाह है हम लोग वांगरमऊ के सरकारी अस्पताल में हैं, गांव में दवायें बांटने गये थे। नाविक आश्वस्त हुआ, उसने नाव आगे बढ़ा दी। मेरा सहायक यह समझ ही नहीं पा रहा था कि मैं यह सब क्यों कर रहा हूं। जब नाव किनारे पहुंची और हम लोगों ने अपनी साइकिलें उतार लीं, तब मेरे सहायक ने नाविक को पकड़ लिया और पूछा, अब बता तूने नाव को बीच में क्यों रोका ? नाविक गिड़गिड़ाने लगा और सच-सच बोला कि, "मैंने समझा था कि वांगरमऊ का कोई सेठ है, अपने मुनीम के साथ उधारी वसूल करके लाया है, वैग में रुपये हैं अतः सोच रहा था कि आप दोनों को नाव से नीचे नदी में गिरा दूं और साइकिलें तथा रुपये ले लूं। लेकिन जब इन बाबू ने वैग पलट दिया और मुझे यह पता चल गया कि ये सेठ नहीं है, डाक्टर लोग हैं तो मैंने नाव चला दी। अब आप चाहें मारो या छोड़ो, हमारा तो जंगल में यही पेशा है। इस नाविक के बयान को सुनकर मेरा साथी सहायक कांप गया, उसने नाविक को छोड़ दिया।

हम लोग साइकिलों पर शिव बाबा की याद में शहर की तरफ चल दिये। वर्षाति का मौसम, अंधेरी रात, ऊबड़ खाबड़ कच्चा रास्ता, खजूर के लम्बे पेड़ चारों तरफ मुंज के झुरमुठ एवं जुगुनुओं की चमक तथा झींगुरों की चीं चीं की आवाज़ वातावरण को भयावह बना रही थी। चूंकि स्वभाववतः मैं अपनी टार्च साथ रखता हूं अतः इस अंधेरे में टार्च के प्रकाश में मेरे पीछे मेरा सहायक एवं आगे मैं दोनों साइकिलें चलाते बढ़ रहे थे। अचानक ही एक और आपत्ति सामने आई। हमारे ऊपर दो तीन टार्चों की रोशनी सामने से पड़ने

लगी। हमने समझ लिया कि आगे डाकू हैं, हमने साइकिले पैर टिकाकर खड़ी कर दीं। मेरा सहायक घबड़ाकर बेहद बेचैन हो गया कि अब क्या होगा! मैंने स्थिति का जायज़ा लिया, अपने रक्षक शिव बाबा की याद में लवलीन हो गया। प्यारे बाबा आप ही सम्भालो अब क्या करना है। अचानक ही मेरे मुंह से जोरों से आवाज निकली, "भाइयो हम पर गोली मत चलाना, हम सरकारी आदमी हैं, आपको जो कुछ लेना है, आकर हमसे ले लो।" मेरी आवाज के उत्तर में दूसरी तरफ से आवाज आई, "हाथ ऊपर करके साइकिलों से अलग खड़े हो जाओ, नहीं तो गोली मार देंगे।" हम लोग साइकिलें एक तरफ खड़ी करके हाथ ऊपर करके खड़े हो गये। मेरा साथी तो खड़ा रो रहा था परंतु मुझे अपना परमधाम एवं परमपिता याद आ रहा था। एक दम अशरीरीपन की स्थिति में हो गया। मेरी आंखें खुली थीं, हाथ ऊपर थे और बुद्धि परम धाम में बाबा से बातें कर रही थी।

सामने से राइफलें ताने टार्च, का प्रकाश डालते चार पांच, आकृतियाँ हमारे पास बढ़ती चली आ रही थीं। जब थोड़ा सा फासला रह गया तो पुनः मेरे मुंह से आवाज निकली, 'भाइयों आपको जो चाहिये सो ले लो हमारी साइकिलें, घड़ियां रुपये पैसे कपड़े सब कुछ ले लो परन्तु मारना नहीं, हम तो सरकारी अस्पताल के लोग हैं गांव से दवायें बांट कर आ रहे हैं।" जैसे ही रायफलधारी पास आये उनमें से एक ने मुझे पहिचान लिया अरे! ये तो परिवार नियोजन के डाक्टर हैं। उसने पूछा, "आप इस समय क्यों चले, आपको पता नहीं यह कैसा एरिया है, यहां दिन दहाड़े लूट एवं हत्या कर देते हैं और आप रात्रि में चल रहे हैं।" मैंने कहा "गाँव में मीटिंग थी, उसमें वार्ता करते देर हो गई, उधर नाव वाले ने देर कर दी, अब ऐसी गलती नहीं होगी, फिर भी हमारे साथ सर्वशक्तिवान है जो कुछ होगा सो कल्याणकारी होगा।

उसने कहा, आप मुझे नहीं जानते, मैंने कहा, "आवाज तो कुछ पहिचानी सी लग रही है, आप अपने चेहरे पर टार्च की रोशनी करें तो पहिचानें।" उसने चेहरे पर अपनी तरफ लाइट की, अरे! तुम लोग तो वांगरमऊ थाने के सिपाही हो भैय्या" वह बोला, हम लोग गश्त पर निकले हैं, इस रास्ते से जब आपकी टार्च का प्रकाश देखा तो हमने समझा डाकू जा रहे हैं, तुरन्त अपनी टार्चें आपकी तरफ की। क्योंकि हम जानते हैं कि इस समय रात्रि में कोई भी भला आदमी इस रास्ते में नहीं आवेगा, जरूर बदमाश ही हैं। हम लोग आपको आपनी राइफलों के निशाने में ले रहे थे तभी आपकी ज़ोरों की आवाज़ सुनी कि "गोली मत मारना हम सरकारी आदमी हैं।" लेकिन हमें विश्वास नहीं हो रहा था क्योंकि बचने के लिये हो सकता है डाकू यह बहाना कर रहे हों, इसलिये हमने आपको साइकिलों से दूर ऊपर हाथ करके खड़ा होने को कहा, क्योंकि हमें भी डर था कि कहीं आपके पास भी हथियार हों और आप हम पर गोली न चला दें।

वाह! प्यारे शिव बाबा, मैंने मन ही मन बाबा की महिमा की। वह सिपाही बोला कि, यदि एक मिनट और आप न बोलते तो हमारा फायर खुल जाता क्योंकि इस रास्ते में लोगों को कई बार डाकुओं ने लूटा है इसलिये रात को कोई भी इस रास्ते से नहीं जाता। हम लोग भी पास के गाँव में गश्त को जा रहे थे, आपकी टार्च के प्रकाश ने हमें चौंकाया और हम रुककर आपकी तरफ बढ़े। यदि आपकी टार्च का प्रकाश हमें दिखाई न देता तो हम तो नीचे गाँव की तरफ मुड़ जाते और आप निश्चय ही आगे छुपे हुए डाकुओं के चंगुल में फंस जाते क्योंकि यहाँ कोई भी रात्रि में लुटे बिना नहीं बचा। सचमुच भगवान ने ही आपकी रक्षा की है। आपका भगवान सच्चा है, अब आप हमारे साथ पास वाले गाँव में चलें, रात्रि को वहीं रुकेंगे, सवेरे लौटकर वांगरमऊ चलेंगे। हमने शिव बाबा का शुक्रिया किया और पास वाले गाँव में सिपाहियों के साथ चले गये।

सिपाहियों ने ग्राम प्रधान के यहाँ हमें ठहराया। प्रधान जी ने दो चारपाइयों की व्यवस्था कर दी। मेरे साथी ने तो भोजन किया लेकिन मैंने राजयोग के अपने नियमानुसार उनका भोजन नहीं किया। चारपाई पर बिस्तर भी नहीं लगवाया, केवल अपने

बैग का तकिया बनाया एवं पहनने के तहमद को ओढ़कर बाबा की याद में सो गया। अमृत वेले चार बजे से पूर्व उठकर बाबा की याद में मधुर गीत गाये जिन्हें सुनकर प्रधान के परिवार जन भी जाग गये और हमारे पास शांति से बैठकर प्रभु प्रेम के गीत सुनने लगे। प्रधान जी ने लालटेन जला दी। एलबम मेरे पास था उससे चित्रों पर ईश्वरीय ज्ञान एवं योग का परिचय सभी को दिया।

प्रकाश होने पर स्नान आदि स्वच्छता से निवृत होकर ग्राम में ही ईश्वरीय ज्ञान के महावाक्य स्वयं पढ़े एवं औरों को सुनाये, तब तक गश्त के सिपाही भी आ गये, उन्होंने भी सुना। यह ग्राम भी मेरे कार्य क्षेत्र में आता था अतः प्रधान जी को वांगरमऊ स्थित गीता पाठशाला में आने का निमंत्रण दिया और शिव बाबा की याद में वांगरमऊ प्रस्थान किया। रास्ते में सिपाहियों को भी ज्ञानयोग की बातें सुनाते शिव बाबा की महिमा बताई।

इस ईश्वरीय राजयोग के चमत्कार का लाभ यह हुआ कि ग्राम प्रधान ने अपने ग्राम में प्रदर्शनी कराई वहां गीता पाठशाला खुली। जो सिपाही साथ में आये उनमें से दो ने राजयोग का नियमित क्लास लेना शुरू किया, जो सहायक मेरे साथ था वह भी रोजाना क्लास में आने लगा।

सचमुच सर्वशक्तिवान पिता की शक्तियों का वर्णन अवर्णनीय है। यदि हम सम्पूर्ण भाव से उसी की श्रीमत पर कदम-कदम पर समर्पित होकर चलें तो वो तो हमारे साथ हाथ बढ़ाये चल रहा है। सर्वस्व त्याग करने वाले का उस पिता परमात्मा को बेहद ख्याल रहता है कि कहीं मेरे बच्चे की हानि न हो जाय। हम एक कदम बढ़ते हैं वह सौ कदम हमारी मदद को दौड़ता है। अब तो पिता सम्मुख आकर बातें करता है, शिक्षायें दे रहा है, बस अपना मिथ्या देह अभिमान छोड़कर जब हम केवल उसी के, बस उसी के मन वचन कर्म से हो जाते हैं तब उसके चमत्कारों को देखकर मन मयूर नाचने लगता है। अतीन्द्रिय सुख की भासना पास में आने लगती है, नारायणी नशा छा जाता है, आनन्दमय शक्ति स्वरूप की स्थिति हो जाती है।

लोग आश्चर्य करते हैं कि आप अकेले इतना सब करते हैं सदा हर्षित मुख हल्के-फुल्के दिखाई देते हैं तब उन्हें राजयोग के चमत्कार को बताना पड़ता है कि कर्मों में कुशलता एवं हर परिस्थिति में विजय का राज मेरा ईश्वर पिता से परिचययुक्त घनिष्ट सम्बन्ध ही है। कोई भी मनुष्यात्मा यदि अपने जीवन में सुख शांति पवित्रता एवं निर्विघ्न सफलता प्राप्त करना चाहता है तो राजयोग के चमत्कारों को देखे, सीखे, समझे। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की चौदह सौ शाखायें विश्व के कोने-कोने में यह चमत्कार जनता को सिखा रही हैं। वर्तमान विनाशकारी परिस्थितियों में सामना करने की शक्ति राजयोग से ही प्राप्त होगी।

□□

(पृष्ठ १२ का शेष)

सागर हैं, जो बिगड़ी हुई तकदीर को सुधारते हैं अर्थात उत्थान की ओर ले जाते हैं। इसलिए ध्यान दें कि कुवृत्ति वाले व्यक्तियों से न्यारे और प्यारे रहकर एक परमात्मा का ही संग करें।

सत्संग केवल एक बार

यों तो जन्म जन्मान्तर मनुष्य गुरुओं का संग, शास्त्रों का संग या महापुरुषों का संग करता ही आया है। उनसे मनुष्यों ने बहुत कुछ सीखा भी। परन्तु सत्य परमात्मा का संग केवल एक ही बार कलियुग के अन्त में होता है और अब वही समय है। तो आओ सभी आत्माएँ अपने परम प्यारे परम पिता का संग करें।

क्योंकि शिव परमात्मा ही सद्गतिदाता है। जो वर्तमान समय मनुष्यात्माओं को सहज राजयोग और सहज ज्ञान की शिक्षा से चढ़ती कला को प्राप्त करा रहे हैं। 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' एक शिव परमात्मा का ही गायन है जो सदा सत्य, कल्याण एवं परम पवित्र अर्थात् सुन्दर है जिन्हों के संग से ही सद्गति प्राप्त होती है। □□

कलियुग के अन्तिम चरण के चिह्न

ब्र० कु० चक्रधारी, शक्ति नगर, देहली

महाभारत में एक प्रसंग आता है जिसमें यह बताया गया है कि पाण्डवों ने एक बार गीता के भगवान से पूछा—"भगवन्, कलियुग, जिसे आप पतन और अधर्म का युग कहते हैं, उसके लक्षण क्या हैं ? हम जानना यह चाहते हैं कि आपके अवतरण के समय के क्या चिह्न होंगे ?"

इस बात का उत्तर रमणीक रीति से और लाक्षणिक रूप से दिया गया है। कथा में बताया गया है कि भगवान ने कहा—"प्रिय पाण्डवो, यदि आप कलियुग के अन्तिम चरण के लक्षण जानना चाहते हैं तो जाओ, अलग-अलग दिशा में घूम आओ और घण्टे-भर में वापस आकर मुझे बताओ कि आपने क्या देखा। आपको जो विचित्रता दिखाई दे, उसका यहाँ लौटकर वर्णन करो।"

"तथास्तु," "जैसी आज्ञा," अच्छा हम जाते हैं", चलो चलें," "आओ देखें"—ऐसा कहते हुए पाँचों भाई अलग-अलग दिशा में चल दिये।

अभी घण्टा भी नहीं हुआ था कि पाँचों लौट आये और उन्होंने अपनी-अपनी विचित्र गाथा सुनाई।

युधिष्ठर ने कहा—"मैंने एक ऐसा हाथी देखा, जिसके दो सूंड थे।"

अर्जुन ने कहा—"मैंने एक पक्षी देखा जिसके पंजों पर मन्त्र लिखे थे परन्तु वह मुर्दों को ठूंगा मार-मार कर खा रहा था।"

भीम ने कहा—"मैंने एक गाय देखी जो अपनी बछड़ी (बड़ी बिटिया) का दूध पी रही थी।"

नकुल ने कहा—"मैंने तीन कुँए देखे। एक कुँआ भरा हुआ था और उसके निकट ही दूसरा कुँआ सूख-सा रहा था और तीसरा कुँआ जो दूर था, उसमें पहले कुँए की ओर से पानी आ रहा था।"

सहदेव ने कहा—"मैंने एक पर्वत पर से बहुत बड़ा पत्थर लुढ़कते देखा। वह रास्ते में वृक्षों को तोड़ता, गिराता हुआ नीचे-नीचे आ रहा था। परन्तु मैंने आश्चर्य की बात यह देखी कि वह एक स्थान पर आकर एक तृण (तिनका) के साथ आकर रुक गया।"

अब पाँचों भाई ठोड़ी के नीचे हाथ रखकर, अँगूठे और अँगुली को अपने होठों पर धरते हुए उत्तर की प्रतीक्षा करने लगे कि देखें भगवन इसका क्या रहस्य बताते हैं।

भगवान बोले—"युधिष्ठर ने जो दो सूंड वाला हाथी देखा, पहले उसका भाव समझो। हाथी राजा की सवारी है, राज-सत्ता का सूचक है। हाथी सूंड ही से पकड़ता और दबोचता है और खाता तथा पीता है। अतः इसका अर्थ यह है कि कलियुग के अन्त में राजा अमीर और ग़रीब दोनों से खाएगा और वादीय तथा प्रतिवादी—दोनों से पैसा ऐंठेगा। गोया राजा के मन में दया और सेवा-भाव न होकर लूट-खसूट से, जैसे-कैसे, वैध, अवैध दोनों तरीकों से और प्रार्थी तथा अभियुक्त—दोनों से छीना-झपटी करने की चेष्टा बनी रहेगी।"

"अर्जुन ने जो पक्षी देखा, उसका भाव क्या था ? उसका अर्थ यह है कि कलियुग के अन्त में ब्राह्मण, पण्डित, पुरोहित, पुजारी, प्रचारक और पाठी मन्त्रों को तो जानते होंगे परन्तु वे अभक्ष्य को खाने वाले होंगे अर्थात अशुद्ध आहार करेंगे। उनका मन, वचन, कर्म एक ही होगा। वे मन्त्रों के ज्ञाता होने के बावजूद भी आचरण से भ्रष्ट होंगे। चरण की पूजा करायेंगे और आचरण से निकृष्ट होंगे।"

"गाय और बछड़ी का जो दृश्य बताया गया है, उसका भी भाव सुन लो। इसका भाव यह है कि माता (अथवा मात-पिता) अपनी बेटियों का भी खाएगी (खाएंगे)।"

गिर जाता है।

अम्बा—उठा अपनी गदा···

मोहनाथ—(क्रोध में)—दैहिक प्यार की गदा फेंकता है···

जो कि अम्बा की ज्ञान मनन की गदा से टकरा कर टूट जाती है···

अम्बा—और कुछ···

मोहनाथ—तुम देखने में तो अबला हो, परन्तु महाबली हो···

अम्बा—ले ये अन्तिम 'ईश्वरीय स्नेह' का बाण'—और मोह नाथ के प्राण पखेरू उड़ गये—

दुर्गा देवी का आगे बढ़ना, मुकाबले पर घमण्डी राय का आना···

दुर्गा—घमण्डी, तुम्हारे सभी साथी मारे गये। जान प्यारी हो तो भाग जाओ।

घमण्डी—दुर्गा, तुम मुझे मारकर ही आगे बढ़ सकोगी, हथियार उठाओ···

दुर्गा—क्यूँ खून खराबा करते हो घमण्डी, तुम भी मारे जाओगे, ऊपर देख···

घमण्डी—यह क्या···तुम नारी को ८ भुजा···सिर पर प्रकाश···यह क्या, तुम मुझ पर जादू कर रही हो···हथियार सम्भालो···नहीं तो मैं तुम्हारी सभी भुजाएँ काट डालूँगा···

दुर्गा—(शंख बजाती हुई)—(धनुष पर बाण)—लो तो यह बाण 'निरहंकारिता' का···इसे रोको···

घमण्डी—तुम्हारा बाण···मेरी भुजा में···परन्तु मेरा कुछ भी नहीं बिगड़ा···अब तुम सम्भलो।

(बाण चढ़ाते हुए)—लो बुद्धि के अहंकार का बाण

दुर्गा—(हँसते हुए)—तुम्हारा बाण हवा में गया···

(गदा उठाते हुए)—लो ये सर्वस्व स्वाह की गदा ···जो तुम्हारा संहार करेगी···

गदा घमण्डी राय के पाँव पर गिरती है

घमण्डी गिरता है···

घमण्डी—(दुख में)—हाय, चोट लग गई···परन्तु मैं इससे घबराने वाला नहीं हूँ। मैं तुम्हें दबोच कर नष्ट कर दूँगा···

(झपटता है)···

दुर्गा—(हाथ ऊपर करते हुए)—लो आत्मिक स्मृति का चक्र···

घमण्डी—ओहो···चक्कर मेरी ओर···भागता है··· आह मैं मरा···मरा···मरा···

स्वर्गा० महामंत्री—(नरक० मंत्री से)—मंत्री, तुम्हारे सभी साथी मारे गये। जाओ नरकाधिपति से कहो, समर्पित करे···

मंत्री—मैं अभी जाता हूँ···नरकाधिपति महाबली है···वह तुम्हें नष्ट कर देगा···

मंत्री का जाना···

मंत्री—(नरकाधिपति से)—महाराज, हमारे पाँचों सेनापति मारे गये···

नरक०—हाय···ऐसा दुर्भाग्य···चलो अब मैं सबका बदला लूँगा···

मंत्री—परन्तु महाराज, हमारे सभी सैनिक मूर्छित हो गये हैं।

नरक०—एँ, यह क्या, मेरी आँखों के आगे अन्धेरा छा रहा है। ये कहीं ईश्वरीय शक्तियाँ तो नहीं हैं।

मंत्री—हाँ स्वामी, मुझे यही लगता है···देखने में तो वे नारियाँ थीं, परन्तु हमारे सेनापति उन्हें देखते ही घबराने लगते थे···

नरक०—मेरा दिल काँप रहा है मंत्री, तुम्हारी क्या राय है? हम लड़ें···?

मंत्री—नहीं महाराज, यह बुद्धिमानी नहीं होगी, हमें समर्पित कर देना चाहिए···

नरक०—तो चलो···

दोनों युद्ध स्थल पर देवियों के सामने जाते हैं··· दोनों हाथ ऊपर करते हैं···

नरक०—देवियों, हम हारे, तुम जीते···हम समर्पित हैं···

स्वर्गा० महामंत्री—दोनों को कैद करते हैं देवियाँ विजय का नगारा बजाती हैं···

पर्दा बन्द

□□

सत्संग तारे, कुसंग बोड़े

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, माउण्ट आबू

कहा जाता है सत्संग का क्षणिक आनन्द भी अति श्रेष्ठ है और भाग्यशाली है वे मनुष्य जिन्हें सत्संग से प्रेम है, अन्यथा तो मनुष्य कलियुग के प्रवाह में इतना बह गया है कि वह सत्संग को पुरानी रस्म कहकर इसमें आना अपनी मानहानि समझता है। परन्तु यह तो अटल नियम है कि मनुष्य वैसा ही बनता है जैसा उसका संग होता है।

संग के दो प्रकार हैं, एक सत्संग और दूसरा कुसंग। संग अर्थात समीपता। जिस वातावरण में जिन व्यक्तियों के साथ हम रहते हैं उनका हम आत्माओं पर प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप में प्रभाव पड़ता है। चाहे वो अच्छा संग हो या बुरा। संग के आधार से ही आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का परस्पर सम्बन्ध है। जब तमोप्रधान आत्माएँ परम पवित्र परमात्मा से योग द्वारा संग करने लगती तो आत्माएँ भी पवित्र बनती और परिणामत: प्रकृति भी सतोप्रधान बनती है।

सत्संग

सत्संग अर्थात सत्य का संग। सत्य का संग हमें अपनी सत्यता की पहचान दिलाकर सत्य की राह पर चलने के लिए प्रेरित करता है। सत्संग से आत्मा उत्थान की ओर अग्रसर होती है और अपने मूल स्वरूप को प्राप्त करती है। परमात्मा को महिमा में हम गाते हैं वो सत् चित आनन्द स्वरूप है। परमात्मा ही सदा सत्य, चेतन और आनन्द स्वरूप है। जहाँ उनका संग किया जाता है वास्तव में उसको ही सत्संग कहा जाएगा।

कुसंग

कुसंग अर्थात जिस संग से आत्मा का पतन होता है। इसी को ही दूसरे शब्दों में झूठा संग, असत्य का संग या बुराइयों का संग कहा जाता है। कुसंग में देहाभिमान का संग, देहधारियों का संग तथा वृत्तियों का संग सम्मिलित है।

सत्संग का आधार– सत्यता

सत्यता के आधार पर ही सत्संग का नाम प्रचलित है। जहाँ सत्य है वहाँ लक्ष्य की पूर्ति विजय के रूप में होती ही है। सत्संग में स्व की सत्य पहचान, स्व के लक्ष्य की सत्य पहचान, कर्मों के गुह्यगति का ज्ञान, पाप और पुण्य कर्मों की सत्य पहचान, स्वभाव संस्कार तथा निजी गुणों की सत्य पहचान प्राप्त होती है, जिनको धारण कर आत्मा पुण्यात्मा बनती है।

जैसा संग वैसा रंग

यह कहावत प्रसिद्ध है जिसके कई उदाहरण समाज में पाये जाते हैं। जैसे कि किसी चरित्र-हीन व्यक्ति का संग सज्जन व्यक्ति से होता है तो वह पतित मनुष्य भी चरित्रवान बन जाता है। इसके विपरीत अगर सौ व्यक्तियों के शक्तिशाली संगठन में एक भी व्यक्ति कुसंग में आता है तो वह सारे संगठन को कमजोर बना देता है। इसी आधार पर "आत्मा ही अपना शत्रु है, आत्मा ही अपना मित्र है" यह कहावत प्रचलित है। जब आत्मा विकारों के प्रभाव में आती है तो कंगाल मोहताज बनती है और जब राजयोग द्वारा सर्व गुणों के तथा शक्तियों के सागर परमात्मा का संग करने लगती है तो सर्व खज़ानों से सम्पन्न बन जाती है।

बिगाड़ने वाले अनेक, सुधारने वाला एक

प्राय: देखा गया है कि जब कोई आगे जाता है तो कुछेक व्यक्ति उसके प्रति इर्ष्या द्वेष युक्त व्यवहार करते हैं। और किसी न किसी रूप से नीचे गिराने के प्रयत्न में तत्पर रहते हैं। एक शिव परमात्मा ही है जो रहम के सागर तथा सुख के

(शेष पृष्ठ ९ पर)

प्रत्यक्षता

ब्र० कु० सूरज कुमार, मधुबन, माउण्ट आबू

भगवान स्वयं इस धरा पर पिछले ४८ वर्षों से अपने दिव्य कर्त्तव्य कर रहे हैं, परन्तु विश्व के कोटि कोटि जन इस सत्य से अनभिज्ञ हैं – कितना महान आश्चर्य ! भगवान ने परम शिक्षक बन कर अपने व अपनी रचना के सभी रहस्य खोल दिये, परन्तु विद्वान अभी भी पुस्तकों के पन्ने पलट रहे हैं !! उन्होंने सम्पूर्ण सत्य खोल दिया, परन्तु भक्त-गण अभी भी सत्य की पिपासा बुझाने के लिए जंगलों में भटक रहे हैं। भगवान के ये गुप्त दिव्य कर्म शीघ्र ही प्रत्यक्ष होंगे। उन्हें प्रत्यक्ष करेगें, उनके वे महान वत्स, जिन्होंने अपने जीवन को साक्षात् मूर्ति बनाया होगा।

"भगवान भारत में आया है" – यह सुनकर किसी के लिए विश्वास कर लेना सम्भव नहीं। अनेक अन्ध-श्रद्धाओं में फंसा प्राणी इस सब बातों से ऊब चुका है। उसे अब कुछ प्रत्यक्ष चाहिए। और हमारे जीवन का प्रत्यक्ष प्रमाण ही भगवान को व उसके दिव्य कर्त्तव्यों को प्रत्यक्ष करेगा। तो यह उन आत्माओं की जिम्मेदारी है जिन्होंने भगवान को पहचाना है व उन पर सर्वस्व बलिहार किया है।

हमें प्रत्यक्ष करना है –

* भारत में भगवान आया है।
* वह पुनः संसार को स्वर्ग बना रहा है।
* भगवान शिक्षक बन कर आया है और उसका ज्ञान ही सम्पूर्ण सत्य है।
* उसने पवित्रता की स्थापना की है और उनकी श्रीमत द्वारा घर गृहस्थ में रहते भी पवित्र जीवन व्यतीत किया जा सकता है।
* भगवान क्या है, हम क्या हैं, सृष्टि चक्र कैसे चलता है।
* परमात्मा स्वयं राजयोग सिखा रहे हैं। वही राजयोग शान्ति का, मुक्ति व जीवन्मुक्ति का सत्य पथ है।

आदि आदि – – – – – – –

अब विचारणीय है कि भगवान, उसका सत्य ज्ञान, व उसके दिव्य कर्त्तव्य कैसे प्रत्यक्ष होंगे। कई लोग प्रश्न करते हैं कि वह स्वयं को स्वयं ही प्रत्यक्ष क्यों नहीं करता ? परन्तु उसने स्वयं को अनेक महान आत्माओं के समक्ष स्वयं ही प्रत्यक्ष किया है। अब विश्व के सभी धर्म अनुयायियों व माया में तल्लीन आत्माओं को परमात्मा को प्रत्यक्ष करना है। हमें याद रहे कि उसकी प्रत्यक्षता तथाकथित चमत्कारों द्वारों नहीं बल्कि हमारी दिव्य स्थिति द्वारा होगी। क्योंकि परमात्मा की प्रत्यक्षता के साथ साथ महान आत्माओं की भी प्रत्यक्षता होगी।

प्रत्यक्षता– वाणी द्वारा नहीं, वरदानी बोल द्वारा –

जब हम राज योगी इतनी ऊँची स्थिति धारण कर लेंगे कि हमारे प्रत्येक बोल वरदानी हों। मानो हमारे मुख से निकली अमृतवाणी से श्रोताओं पर वरदानों की बौछार हो तो ऐसे सुखदाई बोल, सुख-दाता को प्रत्यक्ष करेंगे। यदि अभी तक भी हम कटु व दुखदाई वचनों का त्याग नहीं कर पाये तो हमें "प्रभु के लाल" कौन कहेगा। अतः हम शब्द-शक्ति को एकाग्र करें, उसे नष्ट न करें, तब हमारी वाणी में शक्ति व ऑथर्टी आयेगी। इसके बिना भाषणों से उस परम सत्ता को प्रत्यक्ष नहीं किया जा सकता। इसलिए जो आत्माएं प्रत्यक्षता के लिए वाणी-स्वरूप हो जाते हैं, यह रहस्य समझ कर उन्हें कम व वरदानी बोल बोलने चाहिएं।

प्रत्यक्षता–साधनों द्वारा नहीं साधना द्वारा –

साधनों द्वारा ईश्वरीय सन्देश दिया जा सकता है परन्तु कलियुगी मनुष्य उस सन्देश को स्वीकार कर लें, इसके लिए सन्देश देने वाली आत्मा में साधना का बल चाहिए। यदि साधना का बल नहीं है तो लोग "बहुत अच्छा" कह कर चले जाऐंगे परन्तु पवित्र बनने का साहस नहीं करेंगे। इसलिए भगवान व उसके दिव्य कर्त्तव्यों को प्रत्यक्ष करने के लिए गहन साधना की आवश्यकता है।

हमें याद है कि पिछले वर्ष, हरिद्वार पावनधाम के स्वामी वेदान्तानन्द जी मधुबन आये थे और जब उन्होंने सभी ब्रह्मा-वत्सों को दो–दो घण्टे योगाभ्यास में एकाग्रचित्त बैठे देखा, ३.३० बजे उठकर योगाभ्यास करते देखा तो कहा कि इस तरह घण्टों एकाग्र चित्त होकर केवल संयमी पुरुष ही बैठ सकते हैं और उन पर इस साधना की ऐसी गहरी छाप पड़ी कि वे शिव बाबा को व उनके ज्ञान–योग को मन से स्वीकार करने लगे।

साधन तो संसार में बहुत हैं, परन्तु साधना नहीं है। आश्रमों में सन्यासी घंटो व्याख्यान करते हैं, परन्तु उनमें भी साधना का बल नहीं है, सन्यासी भी साधना को वास्तव में, छोड़ बैठे हैं।

अतः हमारी योग–साधना, योग सिखाने वाले को प्रत्यक्ष करेगी और जब मनुष्य यह जान लेंगे कि भगवान स्वयं योग सिखा रहे हैं तो सभी प्रचलित योग असत्य सिद्ध हो जाऐंगे और प्यासी आत्माएँ स्वयं भगवान से योग सीखने के लिए दौड़ पड़ेंगी। इसलिए हम राजयोगियों को साधनों की होड़ में न जाकर साधना में तत्पर हो जाना चाहिए।

हमारे सत्य–स्वरूप द्वारा सत्य ज्ञान की प्रत्यक्षता –

विद्वान लोग ज्ञान को तर्क की कसौटी पर कसना चाहते हैं परन्तु तर्क हमें अन्तिम सत्य तक नहीं पहुंचा सकता। विद्वान केवल वहीं तक तर्क कर सकते हैं जितना शास्त्रों में लिखा है। तर्क बहुत सीमित है। जहां तर्कशास्त्रियों की बुद्धि बन्द हो जाती है, उसे ही वे अन्तिम सत्य समझ लेते हैं परन्तु सत्य कुछ और है – इसे हमारा सत्य स्वरूप प्रत्यक्ष करेगा। वास्तव में, सत्य को हम तर्क द्वारा सिद्ध नहीं कर सकते। बल्कि, जब उस ज्ञान के, जो कि हमें उस सत्य परम शिक्षक से मिला है, हम स्वरूप बन जाऐंगे तो सत्य ज्ञान स्वतः ही प्रत्यक्ष हो जायेगा। हमें तर्क देने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी।

जैसे हम यह जानते हैं कि हमारा आदि स्वरूप क्या है – 'हम देवतायें' यह हमारे देवत्व स्वरुप धारण करने से स्वतः सिद्ध हो जायेगा । हमारे अनुभव-शील जीवन के समक्ष विद्वानों का तर्क-शील जीवन फीका लगने लगेगा।जब हम जीवन में रहते हुए सर्व बंधनों से व विकारों से मुक्त हो जाऐंगे तो प्रत्यक्ष हो जायेगा कि हमें मुक्ति का सत्य पथ प्राप्त हुआ है ।

आदर्श-जीवन परमपिता को प्रत्यक्ष करेगा–

हमें यह कहने की आवश्यकता नहीं कि "हमने भगवान को पा लिया", बल्कि हमारा जीवन ही इसे प्रत्यक्ष करेगा । कल्पना करो कि यदि सन्यासियों को यह आभास हो जाए कि ब्रह्माकुमार कुमारियों का भगवान से सीधा सम्बन्ध है और ये भगवान से मिलते हैं तथा उनसे अनुपम वार्तालाप का अलौकिक रस पान करते हैं तो क्या हो जाए! परन्तु यदि भगवान को पाकर भी हम गम्भीर नहीं बने, यदि भगवान जैसी सर्वोच्च प्राप्ति के बाद भी, सांसारिक प्राप्तियों के पीछे भाग रहे होंगे, यदि शान्ति के सागर को पाकर भी, हम परम शान्ति में नहीं डूबे होगें, यदि उस परम सत्ता से मिलकर भी हमें संतोष नहीं हुआ होगा तो कौन विश्वास करेगा कि हमें भगवान मिले हैं । अतः हमारा सन्तुष्ट, शान्त, प्रसन्न, उपराम व अडोल जीवन ही हमारे प्रभुमिलन को प्रत्यक्ष करेगा और तब ही अनेक आत्माएं प्रभु-मिलन का सर्वोच्च भाग्य पा सकेगी ।

अतः हमारा जीवन ऐसा हो जो महसूस करें कि ये कलियुगी मनुष्य नहीं हैं । हमारा जीवन इतना शान्त हो जो लोग ये अनुभव करें कि इन्हें कलियुग की अशान्ति छू नहीं सकती । हमारे जीवन में इतना संतोष हो जो देखने वाले अनुभव करें कि इन्हें सर्वस्व मिल चुका । हमारा जीवन इतना न्यारा हो जो दूसरों को प्रेरणा मिले, तब प्रभु-मिलन की प्रत्यक्षता होगी ।

हमारी पवित्रता उस परम पवित्र को प्रत्यक्ष करेगी–

बड़े बड़े सन्यासियों के मुख से हम सुनते हैं कि कलियुग में सम्पूर्ण पवित्रता को अपनाना खेल नहीं है, यह अति कठिन तपस्या है। परन्तु ईश्वरीय बल व ज्ञान से यह खेल तुल्य है व जीवन का मनोरंजन है ।

तो जब कलियुग के शंकराचार्यों, महामण्डलेश्वरों, जगद्गुरुओं व आचार्यों को यह अहसास होगा कि कलियुग के घोर दूषित वातावरण में रहते हुए लाखों ब्रह्मा-वत्स ब्रह्मचर्य का पालन कर रहे हैं तो उनकी मान्यताएं झूठी सिद्ध हो जाएगी और ब्रह्मा-वत्सों के समक्ष झुकना पड़ेगा ।

परन्तु यदि आपकी पवित्रता में लोग विश्वास नहीं करते तो यह आपकी कमज़ोरी है । स्पष्ट है कि आपने पवित्रता को स्वरूप में नहीं लाया है । पवित्रता की शक्ति अति महान है, उसकी प्रत्यक्षता शब्दोंसे नहीं, चेहरे की दिव्यता से होती है । अतः अपने चेहरे पर पवित्रता का तेज इतना धारण करो जो आपके चेहरे से परम पवित्र परमात्मा प्रत्यक्ष हो ।

(शेष पृष्ठ २० पर)

अब निकट ही भविष्य में, जब सम्पूर्ण पावेत्र आत्माएं, कलियुगी तिमिर में सम्पूर्ण चन्दा की तरह चमकेंगी, तब अहंकार में चूर मनुष्यों की तन्द्रा भंग होगी और उन्हें स्वीकार करना होगा कि ये दिव्य कर्त्तव्य स्वयं प्रभु का ही है । परन्तु तब वे अपने जीवन को दिव्य नहीं बना पायेंगी और उन सम्पूर्ण पवित्र विभूतियों को अपना जन्म का इष्ट स्वीकार कर लेंगी । सम्पूर्ण पवित्रता परमात्मा के दिव्य कर्तव्य का प्रत्यक्ष प्रमाण है और जिन सिद्धांतों पर चलकर मनुष्य स्वयं को सम्पूर्ण पवित्र नहीं बना पाये, उनकी असत्यता भी सिद्ध हो जाऐगी ।

और जब पवित्रता की सुगन्ध समस्त विश्व को सुगन्धित करेगी तो यह कहने की आवश्यकता नहीं होगी कि विकार छोड़ो । स्वतः ही अनेक मनुष्य अपने मनोविकार इस पवित्र यज्ञ में स्वाह करेंगे ।

पवित्र व शान्ति के प्रकम्पन परमात्मा को प्रत्यक्ष करेंगे–

किसी भी सन्यासी के आश्रम में, या मन्दिर में शान्ति का क्षणिक ही अनुभव होता है । परन्तु जहां अनेक पवित्र व शान्तचित्त वाली आत्माएं रहती हों वहां का शान्त वातावरण मनुष्यों को वहां जाने के लिए प्रेरित करेगा ।

अभी अभी भारत के मूर्धन्य विद्वान, हरिद्वार के जगद्गुरु आश्रम के मुख्य, महामण्डलेश्वर स्वामी प्रकाशानन्द जी मधुबन में आये थे । रात्री में सभी के सो जाने के उपरान्त, स्वामी जी यहां के वातावरण का निरीक्षण करने के लिए उठे और काफी देर तक घूम घूम कर देखते रहे उन्हीं के शब्दों में–

"जैसी शान्ति मैने रात यहां के वातावरण में अनुभव की, वैसी शान्ति के लिए देवता भी तरसते हैं,"– ये थे उस विद्वान सन्यासी के शब्द जो ४० वर्ष से इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के आलोचक रहे । अन्त में उन्होंने कहा – "जब भी आप बुलायेगें मैं शान्ति अनुभव करने के लिए अवश्य आऊंगा" । उसके इस अनुभव ने उन्हें हमारा सहयोगी बना दिया, उनके मन की ईर्ष्या समाप्त होकर स्नेह में बदल गई और वे सदा मुक्त कंठ से प्रसंशा करते रहे । तो हमने देखा कि पवित्र व शान्त वातावरण मनुष्य को कितना प्रभावित करता है ।

तो हमारे सेवा-केन्द्रों का वातावरण ऐसा हो जो वहां कोई भी आवे तो शान्ति का अनुभव करे । वहां के वातावरण में उसे परम आनन्द हो । वहां थोड़ा भी लौकिकता का वातावरण न हो । बाह्यमुखता का वातावरण न हो । हद के संकल्पों का वातावरण न हो। इसके लिए केन्द्रों पर विशेष योग के कार्यक्रम रहें, तथा वहां रहने वाली आत्माएं रुहानियत में रहें । तब यह अलौकिक वातावरण प्रसिद्ध हो जाऐगा और सब जान लेंगे कि यदि किसी को शान्ति चाहिए तो ब्रह्माकुमारी आश्रम पर जाओ ।

वातावरण के बिना ज्ञान सूखा लगता है । पथ कठिन लगता है, मंजिल दूर लगती है । और शान्त व आनन्दित वातावरण सब कुछ सरल कर देता है । जैसे कि मधुबन के वातावरण में आकर सभी आत्माएं अपने अहम् को भूल जाती हैं, कमियों को महसूस करने लगती है व सरल पुरुषार्थ अनुभव करती हैं । तो वैसे ही हमारे

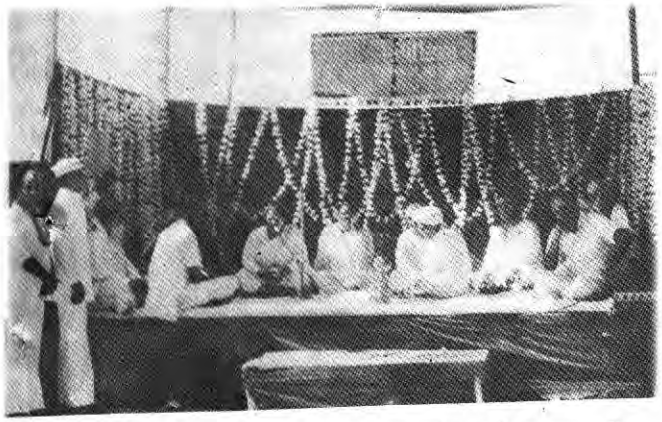

सिंधी समाज के नूतन वर्ष के चेटी चंद महोत्सव के उपलक्ष्य में 'नेताजी युवक मण्डल' द्वारा आयोजित सिंधियों की सभा के समक्ष ब्र० कु० सरला बहन सिंधी में प्रवचन करते हुए। मंच पर रामहर्षदास जी महाराज तथा सिंधी मंडल के प्रतिष्ठित व्यक्ति बैठे हैं।

अहमदपुर खैगांव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए वहां के सरपंच एवं ब्र० कु० शशी ब्र० कु० भगवती तथा अन्य भाई बहन।

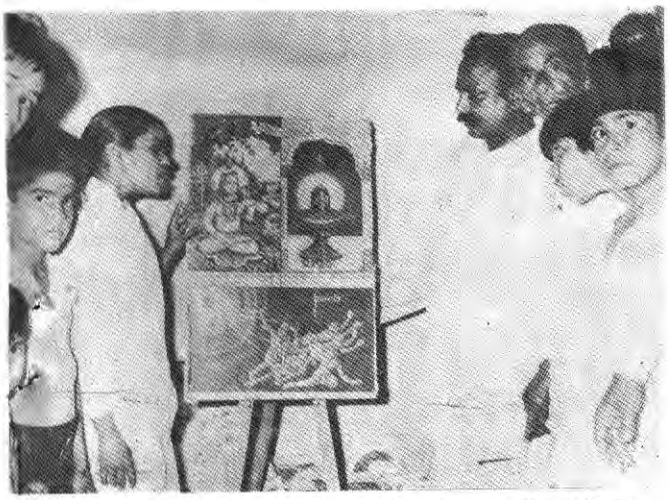

ग्वालियर सेवा केन्द्र द्वारा रामायण धर्मशाला में लगाई गई 'विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी' में नगर पालिका के पार्षद भ्राता द्वारका प्रसाद बघेले जी को समझाते हुए ब्र० क० लीला बहन।

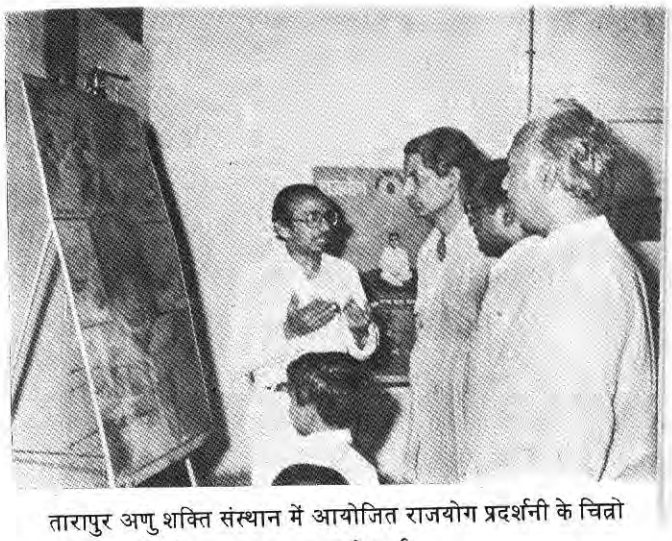

तारापुर अणु शक्ति संस्थान में आयोजित राजयोग प्रदर्शनी के चित्रो की व्याख्या करते हुए ब्र० कु० जयन्ती भाई।

ब्र० कु० भावना के विदेश यात्रा से आने पर बांसवाड़ा के नगर पालिका हाल में वहां के कलेक्टर की अध्यक्षता में एक स्नेह मिलन का आयोजन किया गया। ब्र० कु० शील स्वागत प्रवचन करते हुए।

शाहदरा सेवा केन्द्र की ओर से मोहन पार्क धर्मशाला में प्रदर्शनी पश्चात् समापन समारोह में प्रवचन करती हुई ब्र० कु० राज बह जी। अनके दाएं तेजराम वर्मा जी, ब्र० कु० लक्ष्मण जी तथा दाएं ब्र कु० प्रेम बहन बैठी हैं।

मण्डी डब वाली में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उदघाटन एस० डी० एम० भ्राता गौड़ जी कर रहे हैं।

हुबली में चित्र संग्रहालय में कर्नाटक राज्य के ट्रांसपोर्ट मन्त्र एम० पी० प्रकाश पधारे। उन्हें ब्र० कु० निर्मला जी चि समझाते हुए।

कटक में "राजयोग एक औषधि" विषय पर गोष्ठी में प्रवचन करते हुए डॉ बी० बी० त्रिपाठी जी, उन के बाएं बैठे हैं डॉ जोगमाया पटनायक, ब्र० कु० मंजु दाएं तरफ ब्र० कु० कमलेश, प्रो० एस० रथ तथा डॉ गिरीश पटेल।

खेड ब्रह्मा सेवा केन्द्र द्वारा वडाली में आयोजित आध कार्यक्रम में प्रवचन करते हुए भ्राता रविंद्र भाई दोसी जी। दायीं ओर भ्राता भालचन्दे भाई दुबे एवं डॉ हरिश भाई भट बाईं ओर ब्र० कु० ज्योत्सना तथा अरुणा विराजमान हैं।

चन्द्रपुर में लगाई गई विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी के अवसर पर ब्र० कु० सावित्री जी, भ्राता दीक्षित जी, भ्राता सारवरे जी तथा अन्य भाई बहन शिव बाबा की याद में खड़े हैं।

भावनगर नशाबंदी कचेरी द्वारा आयोजित 'सर्व धर्म सम ब्र० कु० गीता बहिन प्रवचन देते हुए, साथ में वहां के मे नशाबंदी कचेरी के अधीक्षक बैठे हैं।

बांदा नगर में आयोजित महिला सम्मेलन की मुख्य अतिथि कु० नीलम बनौधा, एस० डी० एम० बांदा को ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए ब्र० कु० दुलारी जी।

कानपुर सिविल लाइन सेवा–केन्द्र द्वारा आयोजित चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात डी० एम० भ्राता हरीश चन्द्र गुप्ता जी अपने विचार लिख रहे हैं। साथ में भ्राता श्याम गुप्ता, ब्र० कु० विद्या व सुमित्रा जी बैठे हैं।

ग्रीन पार्क–नई दिल्ली में मानव उत्थान आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करने के पश्चात ब्र० कु० लक्ष्मी ब्र० कु० चक्रधारी तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहन चित्र में खड़े हैं।

किओझर सेवा केन्द्र के द्वितीय वार्षिक समारोह में भ्राता जगबन्धु, प्रोजेक्ट प्रशासक आई० टी० डी० ए० प्रवचन करते हुए।

बंगलोर कैन्ट सेवा केन्द्र पर कर्नाटक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता ए० के० लक्ष्मेश्वर, ब्र० कु० सरला, जी० के० सत्या तथा अन्य चित्र में दिखाई दे रहे हैं।

हरीनगर दिल्ली में मानव कल्याण अर्थ लिये गए प्लाट पर शिलान्यास समारोह के अवसर पर ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी, ब्र० कु० चन्द्रमणि जी, ब्र० कु० शुक्ला तथा अन्य ब्र० कु० बहन भाई शिव बाबा की याद में खड़े हैं।

उपरामचित्त

यह एक सार्वकालिक और सार्वजनिक सत्य है कि जिसको जो वस्तु प्रिय है उसका मन उस तरफ़ ही दौड़ता है। मधु-मक्खियाँ मधु पाने के लिये फूलों की ओर दौड़ती हैं? भौंरा फूल के कोमल पराग का पान करने के लिये दीवाना बना रहता है, विषयी कामरूपी विष का क्षणिक सुख लूटने की चेष्टा में रहता है। अब योगी अथवा ज्ञानी के लिये प्रिय से भी प्रिय अर्थात् अति प्यारी वस्तु तो एक परमपिता परमात्मा ही है क्योंकि एकमात्र वही तो जीवन को सुख-शान्ति सम्पन्न बनाने के लिये अविनाशी ज्ञान-रत्नों का दाता और अलौकिक स्नेह से युक्त प्रेम का सागर गाया हुआ है। इस लिये भक्तिमार्ग में भी मनुष्य अपने मन को विषय-विकारों से हटाकर अपने इष्ट की तरफ़ लगाना चाहते हैं। परन्तु जबकि उन्हें अपने इष्ट का वास्तविक परिचय अर्थात् ज्ञान हीं नहीं होता और उन्हें परमात्मा सर्व-रसनाओं (शान्ति, आनन्द, प्रेमादि) सहित उनको क्रियात्मक रूप में (प्रेक्टीकल में) मिला ही नहीं तो उनका चित्त संसार से उपराम होकर एक परमात्मा में मग्न ही कैसे हो सकता है? भले ही भक्त अपने इष्ट का अपने अन्तर में ध्यान करने का पुरुषार्थ करते हैं परन्तु उनके चित्त की वृत्ति को कोई ठोर थोड़े ही मिलता है? उनका चित्त तो बिना नौका के सागर के पक्षी के समान भटकता रहता है। ठोर देने वाला खिवय्या तो परमात्मा ही है जो कि विषयी संसार-सागर में आकर, अपनी ज्ञान-नौका में ठोर (पनाह, शरण) देकर पार लगाते हैं। इसलिये क्रियात्मक (प्रेक्टीकल, practical) रीति से उपरामचित्त हो वही सकता है जो कि ज्ञान-सागर परमात्मा की ज्ञान-नौका में आ बैठे।

जब तक किसी मनुष्य की प्रीति सर्वशक्तिमान् परमेश्वर के अव्यक्त स्वरूप के साथ नहीं जुटी और जब तक वह मीठे-से-मीठे परमपिता परमात्मा पर मस्त और मुग्ध नहीं हुआ तब तक उसे इस विकारी और पुराने संसार की रसनायें भी अपनी ओर खेंचेंगी अवश्य। तब तक उसका चित्त पूर्ण रीति से उपराम हो ही नहीं सकता। जब तक उसके चित्त को यह समझ न आए कि—"मुझ बिना-पंख पक्षी की ठौर तो है हो एक परमात्मा," तब तक वह अपनी ठोर अन्य स्थानों (विषयों) पर ढूंढता ही रहता है। परन्तु आखिर थक कर उसे सुख-चैन मिलना तो एक ही दुःख-हर्त्ता और सुखदाता परमात्मा), से है ना? इसलिये जो शीघ्र ही ज्ञान के इस तथ्य को समझकर परमपिता परमात्मा की शरण ले लेता है वह शीघ्र ही सुख की ठोर (शरण-स्थल) पा लेता है। सुखदायी परमात्मा उस वत्स को माया के ताप से और विकारों के काँटों से और दुनिया के कष्टों से, युग-युगान्तर के लिये उपराम कर देते हैं और उसे ज्ञान और योग के पंख देकर, काँटों की इस दुनिया से पार शान्तिधाम और सुखधाम में उड़ा ले जाते हैं।

परन्तु मूढ़मति इन्सान जन्म-जन्मान्तर विषयों में ठोर ढूंढने के अगण्य प्रयत्न करने पर भी जब शान्ति की ठोर पाने में निष्फल होते हैं तो भी वे उन विषय-विकारों से उपरामचित्त नहीं होते। केवल परमात्मा ही के जो ज्ञानी वत्स बनते हैं उनका ही मन परमात्मा की सर्व अलौकिक रसनाओं को पाकर इस संसार से उपराम और शान्त हो जाता है। वह ही संसार की अनेकानेक इच्छाओं से ऊपर उठ कर, आन्तरिक खुशी और अन्तर्मुखता की रसना में नित्य डुबकी लेते रहते हैं। उनका मन इस कलियुगी संसार की ओर जा ही नहीं सकता।

गृहस्थ में ब्रह्मचर्य सम्भव

ले० ब्र० कु० रेवादास, विलासपुर (हि० प्र०)

ब्रह्मचर्य का अर्थ है मन, वचन और कर्म में सर्व कर्मेंद्रियों पर पूर्ण संयम। अर्थात् पुरुष और स्त्री एक दूसरे को विकारी दृष्टि से न देखें, न छुएं और न ही उनके मन में स्वपन में भी वासना के विचार उत्पन्न हों। ब्रह्मचर्य ईश्वर द्वारा दी गई वह अमूल्य निधि है जिसके पालन से व्यक्ति के चेहरे पर तेज, वाणी में ओज तथा कर्मों में निखार आता है। ब्रह्मचर्य पालन ही वह गुप्त शक्ति है जिसके आधार से कोई भी आध्यात्मिकता के शिखिर पर पहुंच सकता है।

शास्त्रों में ब्रह्मचर्य की महिमा –

शास्त्रों में ब्रह्मचर्य को ही परम धर्म, परमतप, वास्तविक यज्ञ, सच्चा व्रत, चारों वेदों के तुल्य फलदायक, आत्मा का स्वरूप, चरित्र का मूल आधार, आरोग्य और सुख शान्ति का साधन और आत्मा तथा परमात्मा के अनुभव का उपाय माना गया है। छांदोग्य उपनिषद जो कि एक मुख्य उपनिषद् है,में कहा गया है कि चारों वेदों का जो फल है अथवा महात्मय है, वही अकेले ब्रह्मचर्य का है।

दृढ संकल्प की आवश्यकता –

ब्रह्मचर्य का ऐसा अर्थ समझ कर और महिमा जान कर जो लोग स्व कल्याण एवं विश्व कल्याण हेतु सपत्नीक जीवन व्यतीत करते हुए ब्रह्मचर्य पालन करना चाहते हैं उन्हें सर्वप्रथम एकान्त में बैठकर परस्पर विचार विमर्श करना होगा कि क्या वे सचमुच इस सर्वोच्च चोटी पर चढ़ने का दृढ़ संकल्प रखते हैं ? यदि ऐसा संकल्प वे दृढ़ निश्चय से कर सकें तो विजय निश्चित है।

गृहस्थ में ब्रह्मचर्य पालन अनिवार्य –

ब्रह्मचर्य पालन सभी के लिए अनिवार्य है ! क्योंकि सभी सुख, शान्ति तथा आनन्द चाहते हैं और ब्रह्मचर्य ही सच्ची मन की शान्ति सुख तथा आनन्द की जननी है, इसलिए जननी को जीवित रखने का प्रयास यदि जीवन की बाज़ी लगाकर भी करना पड़े तब भी हम लाभान्वित ही रहेगें। विशेष रूप से ब्रह्मचर्य पालन की आवश्यकता गृहस्थियों को अधिक है। क्योंकि बचपन संयोग से और बुढ़ापा शारीरिक दुर्बलता एवं अन्य अनेक व्याधियों से किसी सीमा तक व्यक्ति को संयमित रखता है। वस्तुतः ब्रह्मचर्य पालन का अधिक ज़ोर गृहस्थियों को देना है।

नारी में पवित्र रहने की शक्ति –

ब्रह्मचर्य पालन के लिए पति-पत्नी को एक दो पर निर्भर होने की कदाचित आवश्यकता नहीं अलबता परस्पर राय अवश्य की जानी चाहिए। विषय भोग के लिए तो एक दो की आवश्यकता हो सकती है, संयम के लिए कदाचित नहीं। यह प्रत्यक्ष सत्य है। पति पत्नी यदि चाहें तो एक दूसरे को पवित्र रहने में सहयोग देकर सबसे बड़ा पुण्य कमा सकते है। इस संबंध में मेरा व्यक्तिगत अनुभव यह है कि स्त्री ही पुरुष को पवित्र बना सकती है। मेरे ईश्वरीय जन्म के पश्चात ऐसे अनेक अवसर आये जब मुझे मेरी पत्नी ने अत्यन्त शक्तिशाली शब्दों द्वारा पवित्र रहने की प्रबल प्रेरणा दी। अतः पति को चाहिए कि वह पत्नी को आगे लाए। पवित्र रहने के लिए पत्नी की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है।

व्यर्थ बहाने न ढूढें –

प्रश्न पूछा जा सकता है कि यदि ब्रह्मचर्य का सख्ती से पालन किया जायेगा तो क्या दाम्पत्य जीवन नीरस न हो जायेगा अथवा मनुष्य जाति नष्ट न हो जायेगी ? वास्तव में ऐसे प्रश्नकर्ताओं ने न तो गृहस्थ में ब्रह्मचर्य का पालन करके देखा है और न ही वे ऐसा साहस रखते हैं। ऐसा प्रश्न अनुभव-शून्यता का परिचायक है। इन प्रश्नों की ओट में स्पष्टतया उनकी कमज़ोरी और डरपोकपन दृष्टिगोचर होता है। सत्यता तो यह है कि उनमें ब्रह्मचर्य पालन के लिए यथेष्ट इच्छा बल ही नहीं है। इसलिए ऐसे बहाने ढूंढते रहते हैं। ब्रह्मचर्य पालन से नहीं अपितु ब्रह्मचर्य भंग होनेसे दाम्पत्य जीवन तुरन्त नीरस हो जाता है और अन्ततोगत्वा संपूर्ण गृहस्थी काम चिता पर जल कर राख हो जाती है।

ब्रह्मचर्य पालन सहज है –

जिसका सर्व कर्मेन्द्रिय पर कन्ट्रोल है वह महात्मा है, जिसने कर्मेन्द्रिय सहित समस्त ज्ञानेन्द्रियों पर भी नियन्त्रण कर लिया है, वह देवात्मा है और जो ऐसा है वह निर्विकार है और निस्सन्देह वह इस जगत में पूजनीय है। अतः जो लोग अभी अविवाहित हैं उन्हें इस झंझट में पड़ने की तकलीफ नहीं करनी चाहिए। किसी बात को न करना, उसको करके छोड़ने से आसान है। टूटे शीशे को जोड़कर काम भले ही चल जाये, लेकिन वह रहेगा टूटा ही।

ब्रह्मचर्य पालन का लक्ष्य महान है –

यद्यपि ब्रह्मचर्य का उद्देश्य सन्तानोत्पति रोकना समझा जाता है तथापि यह मूल लक्ष्य नहीं है। ब्रह्मचर्य का उद्देश्य इससे भी बहुत ऊंचा है। जहां समाज और राष्ट्र की बढ़ती हुई जनसंख्या को ब्रह्मचर्य पालन द्वारा बिना खर्च किए रोका जा सकता है वहां इसके पालन करने वाला शीघ्र ही आत्मानुभूति एवं परमात्मानुभूति कर लेता है। नीच से उच्च, पतित से पावन, शूद्र से ब्राह्मण, पुजारी से पूज्य तथा मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई केवल ब्रह्मचर्य धारण करके ही पढी जा सकती है। ब्रह्मचर्य धारण करते ही समस्त विकार काबू में आने लगते हैं। अच्छा करने के लिए, अच्छा बोलने के लिए और अच्छा सोचने के लिए भी ब्रह्मचर्य पालन की नितान्त आवश्यकता है।

विश्व की किसी भी समस्या, विघ्न, परिस्थिति एवं परेशानी का हल ब्रह्मचर्य पालन में निहित है। इसी से बुद्धि का ताला खुलता है। बुद्धि सूक्ष्म ईश्वरीय प्रेरणाओं को पकडने में सक्षम होती है। ब्रह्मचर्य पालन द्वारा स्वयं भी पवित्र बनना तथा औरों को भी पवित्र बनने में मदद देना, मानव जाति की सबसे बड़ी सेवा है। क्योंकि पवित्रता ही सुख शान्ति की जननी है संसार में सुख शान्ति की स्थापना के लिए ब्रह्मचर्य पालन अनिवार्य है। ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद जिन्होंने थोड़े समय के लिए भी ब्रह्मचर्य का सही पालन किया है उन्हें अपने मन और शरीर के बढ़े हुए बल का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ होगा और वे इस पारसमणि की रक्षा प्राणों की भान्ति यत्न पूर्वक करते होंगे

ईश्वर अवतरण का प्रत्यक्ष प्रमाण—गृहस्थ में ब्रह्मचर्य—

सम्भव है आरम्भ में गृहस्थियों को ब्रह्मचर्य पालन में सफलता प्राप्त न हो, परन्तु इसमें दिलशिकस्त होने का कोई कारण नहीं होना चाहिए। यह तो अत्यन्त उत्साह से, खुशी से तथा स्वेच्छा से अपनाया जाना चाहिए। इसे अपनाने में मजबूरी या तनाव महसूस नहीं होना चाहिए।

ब्रह्मचर्य पालन में एक—दो को गिरता देख जो लोग हतोत्साहित हो जाते हैं अथवा पीछे हट जाते हैं उन्हें समझना चाहिए कि वे कभी आगे बढ़े ही नहीं थे, उन्हें झूठा नशा था वह उतर गया। ब्रह्मचर्य पालन के लिए गीदड़ की नहीं शेर की सवारी की जरुरत है। सदैव संकल्प से ही 'काम महाशत्रु' पर विजय प्राप्त की जा सकती हैं। ब्रह्मचर्य का मूल्य पूर्णतया समझ चुकने के बाद भी मैंने स्वयं भूलें की हैं और उसका बुरा फल भोगा है। जब मैं इन भूलों के पहले और बाद की अवस्था का महान अन्तर देखता हूं तो मेरा मन लज्जा और पश्चाताप से भर जाता है। किन्तु सतत् प्रयास द्वारा पिछली भूलों ने मुझे इस पारसमणि का संचय करना सिखा दिया है और आज मुझे यही सर्वाधिक नशा और खुशी है कि हम (युगल) ईश्वरीय ज्ञान एवं योग के आधार पर गृहस्थ में भी ब्रह्मचर्य का सफल प्रयोग कर रहे हैं। ईश्वर अवतरण का इससे बढकर और क्या प्रमाण हो सकता है ?

★

(पृष्ठ १४ का शेष)

आश्रमों का वातावरण प्रत्यक्षता को समीप लायेगा।

फरिश्ते स्वरूप द्वारा प्रत्यक्षता—

"मनुष्य फरिश्ता बन सकता है" — यह तो वर्तमान युग में कल्पनातीत बात है। परन्तु जब मनुष्य हमें फरिश्ता स्वरूप में देखेगें अर्थात् जब वे मनुष्य को ऊपर उड़ता हुआ देखेगें तो उन्हें परमात्मा को मन से स्वीकार करना ही पडेगा।

अतः हमारे चेहरे का रुहानी नशा, हमारे जीवन की उपरामता, हमारी मुक्त स्थिति, हमें फरिश्तेपन के समीप ले जाऐगी और हमारा संपूर्ण फरिश्ता स्वरूप अनेक कमज़ोर रूहों को बल देगा। अनेक भटकती हुई आत्माओं को राह दिखायेगा, अनेकों को दिव्य साक्षात्कार करायेगा, और इस प्रकार शिव—बाबा को प्रत्यक्ष करेगा।

इस प्रकार भक्त और सन्यासी जब हमें फरिश्ता स्वरूप में देखेगें तो उन्हें प्रत्यक्ष साक्षात्कार होगा। जब अनेक भक्तों को हमसे परमात्मा का स्वरूप दिखाई देगा, तब धरती पर आये हुए परमपिता की प्रत्यक्षता होगी। तब सृष्टि पर पुनः जय जयकार होगी। सभी कहेगें, "मेरा बाबा" और अन्त में मुक्ति य जीवन्मुक्ति का अधिकार प्राप्त करेंगे।

अतः वे आत्माएं जो अपने सच्चे परमपिता से निशिदिन मिलन मना रही हैं, जो उसके मिलन के अतीन्द्रिय सुखों का रसास्वादन कर रही हैं, जिनका जीवन - पुष्प खिल चुका है, जिन्हें परमपिता से सर्वस्व प्राप्त हो चुका है, चाहिए कि अपने तीव्र पुरुषार्थ द्वारा शीघ्रातिशीघ्र अपनी सम्पन्न स्थिति को प्राप्त करें ताकि परमात्मा की प्रत्यक्षता हो और अनेक प्यासी आत्माएं अपने बहुकाल से बिछुडे हुए परमपिता से पुनः मिलन मना सकें।

कर्म और कर्म-फल

मनुष्य जो कर्म करता है उसका वह परिणाम अथवा फल भी अवश्य भोगता है। प्रत्येक कर्म करने से मन पर भी उसका कुछ-न-कुछ प्रभाव पड़ता ही है; अर्थात् प्रत्येक कर्म के परिणामस्वरूप मन के संस्कार बन जाते हैं। उसके आधार पर मनुष्य फिर अच्छे या बुरे कर्म करता है और उसके फलस्वरूप फिर उसका अच्छा या बुरा फल भोगता है। इस प्रकार कर्म और फल अथवा संस्कार, कर्म और प्रारब्ध का अनादि चक्कर चलता ही रहता है।

इन्दौर में
अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग शिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र
तथा
जीवन दर्शन आध्यात्मिक संग्रहालय

मध्यप्रदेश क्षेत्रीय कार्यालय हेतु इन्दौर में एक विशालकाय भवन का निर्माण किया गया है जिसमें उपरोक्त वर्णित अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग शिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र तथा जीवन दर्शन आध्यात्मिक संग्रहालय द्वारा विशेष रूप से ईश्वरीय सेवा की जायेगी। १८ मई १९८४ को संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी द्वारा इस भवन का उद्घाटन किया जायेगा। उद्घाटन समारोह के उपलक्ष्य में १९ मई एवं २० मई, १९८४ को "मानव एकता आध्यात्मिक सम्मेलन" आयोजित किया गया है।

प्रजापित ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय एक आध्यात्मिक शिक्षा का शैक्षणिक संस्थान) Educational Institution) है। इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य मानव जीवन में पवित्रता, प्रेम, सुख, शांति, आनन्द आदि दिव्य गुणों की अनुभूति द्वारा नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना कर विश्व बन्धुत्व, विश्व एकता लाना है। चरित्र निर्माण द्वारा एक श्रेष्ठ और आदर्श समाज की रचना करना है।

इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मध्यप्रदेश क्षेत्र इन्दौर के न्यू पलासिया में "ओमशान्ति, भवन" का नव निर्माण केवल २ वर्ष की अल्पावधि में अथक परिश्रम, योजनाबद्ध तरीके, अटूट लगन एवं सभी के उमंग उत्साह से हुआ है। यह भवन नगर के मध्य, रेलवे स्टेशन व बस स्टैंड के समीप तथा शांत क्षेत्र में बना है। जिसमें "जीवन दर्शन आध्यात्मिक संग्रहालय", अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग शिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, राजयोग साधना कक्ष, आध्यात्मिक प्रवचन सभागृह (Auditoirum) साहित्य विभाग, वाचनालय, प्रेस व प्रकाशन विभाग, प्रशासकीय कक्ष, राजयोग शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र, राजयोग शिविर कक्ष, युवक कल्याण केन्द्र, नारी उत्थान आध्यात्मिक केन्द्र स्वागत कक्ष, ज्ञानगोष्ठी कक्ष, रसोईघर आदि समस्त सुविधायें हैं।

जीवन दर्शन आध्यात्मिक संग्रहालय
(सृष्टि की कहानी, मूर्तियों की जबानी)

इस संग्रहालय में मानव जीवन के दार्शनिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं आध्यात्मिक तथ्यों को बहुत ही वैज्ञानिक ढंग से सुन्दर, सुसज्जित, कलात्मक मूर्तियों, मनमोहक मॉडल्स के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इसमें जीवन दर्शन, आत्म दर्शन, परमात्म दर्शन, राजयोग दर्शन, भारत दर्शन, विराट दर्शन, समय दर्शन, नव विश्व दर्शन आदि विषयों पर भव्य ९ प्रदर्शन पेनल (Display Panels) निर्मित किये गये हैं। जिससे सामान्य नागरिक भी यह समझ सके कि मानव जीवन श्रेष्ठ है। इसको सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए इन आध्यात्मिक तथ्यों को व्यावहारिक जीवन में उतारना अति आवश्यक है। संग्रहालय का निर्माण उड़ीसा व देहली के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मूर्तिकार एवं चित्रकारों ने किया है। जिनमें दृश्य-श्रव्य साधनों (Audio-Visual Aids) का भी प्रयोग किया गया है। यह संग्रहालय समस्त भारत में अपने आप में निराला, अनूठा एवं नवीनतम तरीकों से बनाया गया है।

पिताश्रीजी के अव्यक्त होने के पश्चात् विश्व का प्रथम सेवाकेन्द्र "इन्दौर"

मध्य प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल माननीय

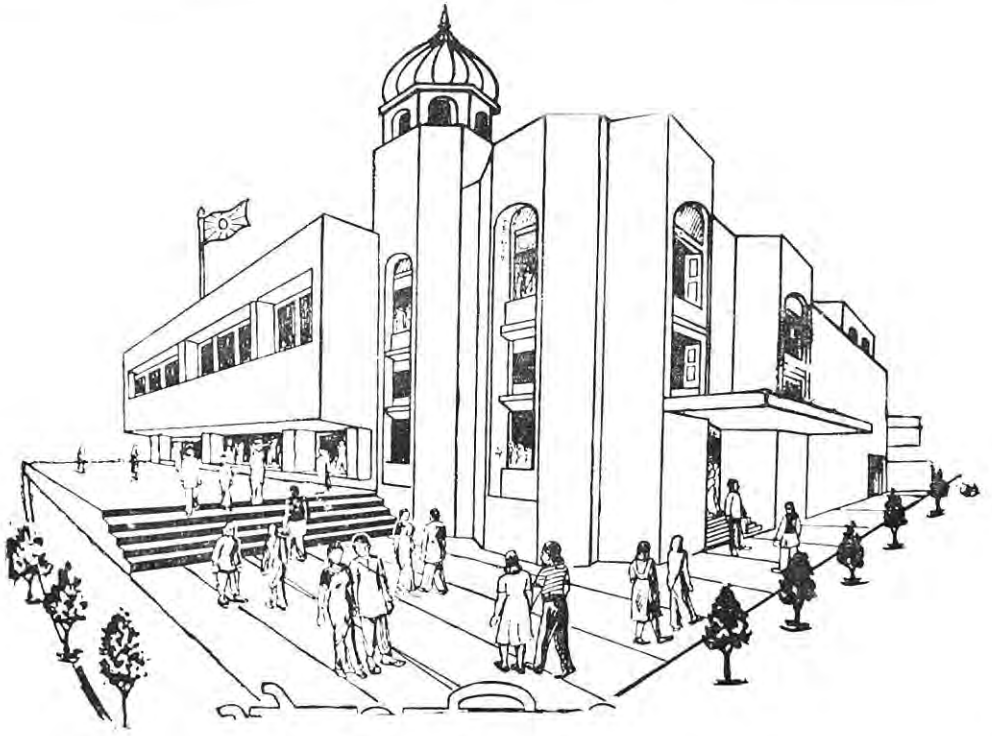

न्यू पलासिया, इन्दौर में नवनिर्मित 'ओम शान्ति भवन'

के० सी० रेड्डी एवं श्रीमती सरोजम्मा रेड्डी का प्रदेश के प्रथम सेवाकेन्द्र जबलपुर के साथ निकट का सम्पर्क था। अतः उनके ही व्यक्तिगत आग्रह और प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप इन्दौर सेवाकेन्द्र का शुभारम्भ हुआ। इसके पूर्व सन् १९६८ में उज्जैन के सिंहस्थ (कुम्भ) मेले में ईश्वरीय सेवार्थ ब्रह्माकुमारी बहिनों का जबलपुर से आगमन हुआ जहां पर इन्दौर सहित सम्पूर्ण भारत से आये लाखों लोगों ने ईश्वरीय सन्देश प्राप्त किया। उसी समय इन्दौरवासियों के आमंत्रण पर इन्दौर में प्रवचन और प्रोजेक्टर-शो के कार्यक्रम आयोजित किये गये। परिणामस्वरूप इन्दौर निवासियों का स्थायी सेवाकेन्द्र के लिए पिताश्रीजी से पत्र व्यवहार चलता रहा।

१८ जनवरी, १९६९ का वह स्वर्णिम यादगार दिवस सदा के लिए इतिहास के पृष्ठों पर "स्मति-दिवस" के रूप में अंकित हो गया जबकि पिताश्री जी ने सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त कर प्रकृति के इस निवासी जिनके प्रयासों को मूर्तरूप देने के लिए सम्पूर्ण होने से केवल पांच दिवस पूर्व स्वयं पिताश्री जी ने एक स्वहस्त लिखित पत्र १३ जनवरी, १९६९ को जबलपुर में ईश्वरीय सेवारत, वर्तमान में मध्यप्रदेश क्षेत्रीय निदेशक ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश जी को लिखा था कि इन्दौर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं दो मास के लिए ईश्वरीय सेवायें आयोजित की जावें।

पिताश्री जी के आदेशानुसार २३ फरवरी, १९६९ को स्थानीय गांधी हॉल इन्दौर में प्रथम "विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी" का शुभारम्भ हुआ। जिसके उद्घाटन हेतु तत्कालीन राज्यपाल माननीय के० सी० रेड्डी जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरोजम्मा रेड्डी स्वयं उपस्थित हुए।

इस प्रकार के पिताश्री जी के सम्पूर्ण होने के बाद विश्व का प्रथम सेवाकेन्द्र होने का गौरव इन्दौर को ही प्राप्त हुआ। सेवाकेन्द्र के साथ ही

संचालित होने लगीं। इसके अन्तर्गत "विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय" का निर्माण किया गया तथा सर्वप्रथम वैज्ञानिक ढंग से "राजयोग साधना कक्ष" का निर्माण किया गया।

गीता रहस्य विश्व सम्मेलन

विश्व विख्यात ऐतिहासिक ग्रन्थ श्रीमद्भगवद-गीता पर प्रथम बार इन्दौर में "गीता रहस्य विश्व सम्मेलन" का सफल अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन किया गया। इस सम्मेलन के पूर्व गीता ज्ञान कब, कैसे और किसने दिया ?" नामक पुस्तक का विमोचन किया गया।

मध्यप्रदेश के विभिन्न नगरों में सेवाकेन्द्रों की स्थापना

मानवता में दिव्यता लाने वाले इस आध्यात्मिक ज्ञान की किरणों ने मध्यप्रदेश के विभिन्न नगरों एवं समीपवर्ती राज्य राजस्थान और उड़ीसा के भी कई नगरों तक ज्ञान प्रकाश फैलाया। जिसके परिणामस्वरूप **मध्यप्रदेश में**—उज्जैन, रायपुर, बिलासपुर, रतलाम, नीमच, खण्डवा, देवास, सिवनी, बड़नगर, बदनावर, धार, राजगढ़, ब्यावरा, बागली, महू, रायगढ़, दुर्ग, भिलाई, राजनांदगांव, कटनी, शहडोल, छिंदवाड़ा, बालाघाट, शुजालपुर, बस्तर आदि। **राजस्थान में**—कोटा, झालावाड़, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बूंदी, मांडला आदि। **उड़ीसा में**—झारसुगड़ा, राजगांगपुर, बेलपहाड़, बृजराजनगर, टिटलागढ़ आदि अनेक नगरों में ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों की स्थापना मुख्यालय की स्वीकृति से की गई। उपरोक्त सेवाकेन्द्रों से सम्बन्धित सैकड़ों उपसेवाकेन्द्र भी कार्यरत है। इस प्रकार हजारों परिवारों को जीवन में एक नई दिशा, नई चेतना प्राप्त हुई। उनका जीवन दिव्यता से एवं ईश्वरीय अनुभूतियों से आलोकित हो गया।

ईश्वरीय सेवार्थ बहिनों का समर्पण

दिव्यगुणों से देदीप्यमान जीवन ने अन्य नागरिकों के जीवन में दिव्य जागृति लाने की प्रेरणा दी जिससे उच्च एवं शिक्षित परिवारों की लगभग ७० बाल ब्रह्मचारिणी कन्याओं एवं माताओं ने अपना जीवन इस रुद्र ज्ञान-यज्ञ में समर्पित किया एवं प्रदेश के विभिन्न सेवाकेन्द्रों पर आज वे ईश्वरीय सेवा हेतु कार्यरत हैं।

उज्जैन कुम्भ (सिंहस्थ) मेले में विशाल आध्यात्मिक मेला

सन् १९८० में उज्जैन में आयोजित कुम्भ (सिंहस्थ) मेले के अवसर पर ईश्वरीय सेवार्थ "नव विश्व आध्यात्मिक मेला" का आकर्षक मण्डप, सुन्दर एवं कलात्मक माडल्स, नई दुनिया स्वर्ग की नयनाभिराम झांकी थी। इससे लगभग १५ लाख लोगों ने लाभ प्राप्त किया एवं पवित्र, राजयोगी बनने की प्रेरणा प्राप्त की।

इन्दौर एवं अन्य नगरों में विशाल सार्वजनिक कार्यक्रम

सेवाकेन्द्रों की स्थापना एवं बहिनों की समर्पणता के साथ ही सभी साधनों द्वारा ईश्वरीय सेवा हेतु सभी स्थानों पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन हुआ जिसके अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर आध्यात्मिक सम्मेलनों, आध्यात्मिक मेलों, आध्यात्मिक प्रदर्शनियां, विभिन्न विषयों पर आध्यात्मिक प्रवचनों, सर्वधर्म परिसंवादों, योग शिविरों, विचार-गोष्ठियां, व्याख्यानमालाएं, पत्रकार वार्तायें, रेडियो वार्तायें, प्रोजेक्टर-फिल्म प्रदर्शनों, सभी समाज के विभिन्न वर्गों जैसे चिकित्सक, अभिभाषक, अभियंता, शिक्षक, न्यायविद, पत्रकार, कृषक, उद्योगपति, व्यापारी आदि के लिए आध्यात्मिक एवं नैतिक उन्नति के लिए कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसके साथ ही बालवर्ग, युवावर्ग, महिला वर्ग की सेवायें की गईं। ग्रामीण सेवा, बंदीगृहों में कैदियों की सेवा, विकलांगों की सेवा, हरिजनों एवं पिछड़े वर्ग की भी आध्यात्मिक सेवा प्रमुखता से की गई है। विभिन्न सामाजिक क्लबों जैसे रोटरी क्लब, लायन्स क्लब, इनरव्हील क्लब, लियो क्लब, भारतीय जेसीज आदि में भी उनके निमंत्रण पर आध्यात्मिक प्रवचनों के कार्यक्रम

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

विजय का नगारा

पात्र

स्वर्गाधिराज— भगवान का स्वरूप
महामंत्री
पाँच सेनापति—सरस्वती देवी, काली देवी, सन्तोषी देवी, अम्बा देवी, दुर्गा देवी
नरकाधिपति—असुर राजा
महामंत्री
पाँच सेनापति—कामदेव, क्रोधपति, लोभाचार्य, मोहनाथ व घमण्डी राय

प्रथम दृश्य

स्वर्गाधिराज एक स्वर्ण आसन पर विराजमान हैं। चेहरे पर दिव्यता चारों ओर अलौकिकता बिखेर रही है। प्रभु मग्न हैं। वे अविचल भाव से मौन बैठे हैं।

महामंत्री का प्रवेश—

महामंत्री—सर्व के रक्षक स्वर्गाधिराज को प्रणाम स्वीकार हो।

स्वर्गा०—आइये मंत्री जी, आज कैसे आना हुआ।

महामंत्री—भगवन्, आपके भक्त आपको याद कर रहे हैं। दुष्ट नरकाधिपति ने सम्पूर्ण पृथ्वी पर अपना राज्य फैला दिया है। और वह दुष्ट आपके भक्तों पर अत्याचार कर रहा है। भक्त आपका आह्वान कर रहे हैं। प्रभु आप तो अन्तर्यामी हो।

स्वर्गा०—तो क्या मेरे भक्त ऐसी यातनाएँ सह रहे हैं।

महामंत्री—हाँ भगवन्, अनेक भक्तों को उसने अपनी जेल में डाल दिया है। और वह उन्हें भिन्न-भिन्न तरह की यातनाएँ दे रहा है।

स्वर्गा०—तो क्या धरती पर कोई भी वीर ऐसा नहीं रहा जो नरकाधिपति का सामना कर सके। और उसका अन्त कर सके।

महामंत्री—नहीं महाराज, सभी वीरों ने उस दुष्ट का आधिपत्य स्वीकार कर लिया है। बड़े-बड़े संन्यासी भी अपना जंगलों का सामराज्य छोड़कर उसकी शरण में नगरों में आ बसे हैं। चुनौति देने वाले योगियों पर भी उसने अपना ऐसा प्रभाव डाला कि वे बरबस उसकी ओर खिचें चले आये।

स्वर्गा०—और मेरे सभी देवों का क्या हुआ ?

महामंत्री—महाराज, वे तो बहुत पहले ही उसकी अधीनता स्वीकार कर चुके। उसकी शक्ति अथाह है। उसका प्रभाव बढ़ता जा रहा है। कुछ बहादुर ऋषि मुनी ही उससे बचकर जंगलों में चले गये हैं। वे वहाँ से ही उस पर चढ़ाई करने की तैयारी कर रहे हैं। परन्तु महाराज···

स्वर्गा०—क्या बात है महामंत्री ?

महामंत्री—महाराज, उन बहादुर ऋषि, मुनियों की सेना बहुत थोड़ी है। और उनके हथियार बहुत पुराने ढंग के हैं। यानि पुराने शास्त्र उनके हथियार हैं। जबकि नरकाधिपति की विशाल वाहिनी आधुनिक शस्त्रों से लैस है। उनके पास सिनेमा, फैशन, नॉवेल, टो० वी०, रेडियो न जाने क्या-क्या हैं। ये शस्त्र उनके पुराने शस्त्रों को पल भर में खत्म कर देंगे।

स्वर्गा०—तो क्यों नहीं, उन वीरों को भी नये हथि-

यार देते ।

महामंत्री—महाराज, वे नये हथियारों को स्वीकार ही नहीं करते । वे कहते कि हम अपनी पुरानी सभ्यता को नष्ट नहीं करना चाहते ।

स्वर्गा०—अच्छा ऐसी बात है । तो क्या करना चाहिए मंत्री···

महामंत्री—महाराज, अगर इस महाबली को न मारा तो यह सारी धरती को हप कर लेगा और आपके भक्तों को बहुत सतायेगा । अत: आप उनकी रक्षा कीजिए ।

स्वर्गा०—तो आपका विचार है कि हम नरकाधिपति पर आक्रमण करें ।

महामंत्री—हाँ प्रभु, अब समय आ गया है । कलियुग का समय पूरा होने को है । आप आज्ञा दें तो सभी सेनापति युद्ध की तैयारी करें ।

स्वर्गा०—अच्छा तो आक्रमण करना ही होगा । मेरे सिवाय कोई इस महाबली का वध नहीं कर सकेगा । तो सेनापतियों को बुलाओ ।

महामंत्री का जाना और पाँचों सेनापतियों को लेकर आना—

पाँचों सेनापति—भगवन, प्रणाम स्वीकार हो ।

महामंत्री—भगवन, पाँचों वीरांगनाएँ उपस्थित हैं ।

स्वर्गा०—देवियों, नरकाधिपति समस्त विश्व पर छा गया है । भक्त त्राहि-त्राहि कर रहे हैं । हमें इस असुर का संहार करना है ।

सेनापति—हम तैयार हैं प्रभु, आप आज्ञा दें ।

स्वर्गा०—देखो देवियों, ये नरकाधिपति बहुत धूर्त, चालाक व धोखेबाज है । तुम्हें उसकी कूटनीतियों से सावधान रहना होगा । और इसके पास विशाल सेना है । परन्तु अगर तुम इसके पाँचों मुख्य सेनानायकों को मार दो तो सारी सेना स्वत: ही भाग जायेगी और तुम्हारी जीत होगी ।

पाँचों सेनापति—आपका आशीर्वाद हमारे साथ है । हम उसकी कोई भी चाल नहीं चलने देंगी । आप हमें अपने दिव्य शस्त्र प्रदान करें ।

स्वर्गा०—मैं तुम्हें तीन-तीन शस्त्र व एक-एक दिव्य शंख देता हूँ । स्वदर्शन चक्र, गदा और धनुष वाण व शंख ।

(हथियार देते हुए)—

यह प्रसिद्ध स्वदर्शन चक्र है जो सभी राक्षसों के गले काटने में समर्थ है ।

यह ज्ञान की गदा—जिसको लगेगी नष्ट कर देगी,

ये धनुष और अनेक ज्ञान-बाण

ये शंख—तुम्हारी शंख ध्वनि सुनते ही नरकाधिपति की सेना को मूर्छा आने लगेगी ।

सेनापति—धन्य हो प्रभु, जीत निश्चित है ।

स्वर्गा०—जाओ महामंत्री···पाँचों सेनापतियों सहित तुम मैदान में जाओ और जल्दी ही असुरों का संहार करके पुन: जग में दैवी साम्राराज्य की स्थापना करो ।

सभी शीश झुकाते हैं···भगवन की जय हो···

पर्दा बन्द

दूसरा दृश्य

नरकाधिपति का दरबार लगा है । नरकाधिपति सिंहासन पर विराजमान हैं । लम्बी मूँछें, भयानक चेहरा उसके अहंकार की धाक जमा रहा है । पास में दो अंग रक्षक, सामने पाँचों सेनापति बैठे हैं ।

महामंत्री का प्रवेश—

मंत्री—महाराज, सुना आपने समाचार···

नरक०—क्या शुभ समाचार लाये मंत्री···

मंत्री—महाराज, सैनिक समाचार लाये हैं कि स्वर्गाधिराज की सेना ने हम पर आक्रमण कर दिया है ।

नरक०---(हँसते हुए) हँ···हँ···हँ···वे कायर नारियाँ हम पर क्या आक्रमण करेंगी । उन्हें तो बहुत पहले ही हमने अपने राज्य से निकाल फेंका था । मंत्री ···सारी धरती पर हमारा शासन है ।

मंत्री—हाँ महाराज, परन्तु सैनिक कह रहे हैं कि उनके पाँचों सेनापति, महामंत्री व अनेक सैनिक दिव्य-शस्त्रों से सजे चले आ रहे हैं । उनके सिर पर प्रकाश के छत्र हैं । अत: हम भी युद्ध की तैयारी करें ।

नरक०—मंत्री, तुम भी बड़े डरपोक हो । तुम किसी के बहकावे में आ गये । अभी कलियुग के लाखों वर्ष बाकी हैं । अभी हमारा साम्राराज्य लाखों वर्ष चलेगा । तुम जाओ, आराम करो । हँ···हँ···हँ···

नेपथ्य में शंख ध्वनि···

मंत्री—महाराज, देखो उनके दिव्य शंखों की आवाज़। और देखो हमारे सैनिकों को मूर्छा आने लगी।

नरक०—हँ···हँ···हँ, तू भी बड़ा भोला है। अरे, ये सब शराब के नशे में चूर हैं। कल महोत्सव में सभी ने खूब पी···अभी तो कलियुग का लम्बा समय है। भगवान हमारे पर चढ़ाई करने की भूल नहीं कर सकता।

पुनः नेपथ्य में शंख ध्वनि···

मंत्री—यह शंख ध्वनि दुश्मन की है। हमें चेत जाना चाहिए।

नरक०—हाँ शंख ध्वनि तो मैंने भी सुनी। परन्तु डरने की क्या बात। भगवान ने भी हमसे लड़ने, नारियों को भेजा है। ये तो हमारी भयानक शंख ध्वनि सुनते ही भाग जायेंगी।

(सेनापतियों से) अच्छा सेनापतियों, जाओ। तुम तो महाबली हो। जाओ इन अवलाओं को पकड़ कर मेरे सामने ले आओ। इन्हें कैद कर लो। महामंत्री, जाओ, विशाल सेना के साथ और दुश्मनों को कैद कर लो। तुम सबको भरपूर इनाम मिलेगा। सभी प्रणाम करते हैं···जो आज्ञा महाराज···

पर्दा बन्द

तीसरा दृश्य

युद्ध का मैदान···एक ओर स्वर्गाधिराज के महामंत्री, पाँचों सेनापति व सेना। दूसरी ओर नरकाधिपति के महामंत्री, पाँचों सेनापति व विशाल सेना···

नरक० मंत्री—(महामंत्री से) तुम लौट जाओ। तुम हमारी विशाल सेना का सामना नहीं कर सकोगे। क्यों व्यर्थ का संहार कराते हो।

स्वर्गा० मंत्री—अब बातों से काम नहीं चलेगा। शौर्य हो तो रण में हथियार उठाओ। हमारे पाँचों सेनापति तुम्हारे सेनापतियों से युद्ध करेंगे। और पीछे मुड़कर देखो—हमारी शंख ध्वनि से तुम्हारी सेना को मूर्छा आ रही है।

नरक० मंत्री—(अपने सेनापतियों से)—वीरों आक्रमण करो। इन नारियों को कैद कर लो।

स्वर्गा० मंत्री—देवियों, एक से एक लड़ो और इन्हें सदा की नींद सुला दो।

सरस्वती का आगे बढ़ना, मुकाबले पर कामदेव का आना।

कामदेव—तुम बड़ी कोमल हो देवी, क्यों अपने जीवन का अन्त करना चाहती हो, वापिस लौट जाओ···

सरस्वती—दुष्ट कामदेव, तुम्हारा अन्त निकट है। मरने के लिए तैयार हो जाओ···

कामदेव—हँ···हँ···हँ···अरे भोली। मैंने बड़े-बड़े शूरवीर तपस्वियों पर शासन कर लिया है। तुम किस खेत की मूली हो। तुम मेरे साथ आओ, मेरे शासन में आनन्द ही आनन्द है।

सरस्वती—दुष्ट क्षणिक आनन्द और सदा काल का दुख। तुम्हारे कारण ही तो धरती पर अन्धकार छाया हुआ है।

कामदेव—तुम सम्भल कर बोलो। बात बहुत हो गई, अब धनुष पर बाण चढ़ाओ···

सरस्वती—लो तो···सम्भलो, मैं आत्मिक स्वरूप की स्थिति का बाण छोड़ती हूँ···

कामदेव—आह, मेरा एक हाथ घायल कर दिया तूने। अब मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूँगा। मैं अपना 'फैशन' का बाण छोड़ता हूँ।

सरस्वती—तुम्हारा बाण खाली गया···

लो अब मैं दूसरा बाण 'आदि अनादि पवित्र स्वरूप' का छोड़ती हूँ···

कामदेव—ओह, तुमने मुझे लंगड़ा कर दिया। तुम ऐसे काबू में नहीं आओगी···सरस्वती पर झपटता है···

सरस्वती—राक्षस, तुम मुझे छू भी नहीं सकते। (अपना हाथ ऊपर करती है) चक्र कामदेव की ओर चलता है···

कामदेव—चक्र मेरी ओर···लो मैं अपना कुचक्र छोड़ता हूँ आह···कहाँ गया मेरा कुचक्र···सैनिकों दौड़ो, बचाओ···चक्र मेरी ओर चला आ रहा है। मैं मर जाऊँगा, देवी रोको इसे।

सरस्वती—नहीं पापी, आज तेरा अन्तिम दिन है। तेरा अन्धकार आज समाप्त।

कामदेवी—हाय···मैं मरा···मैं···मरा।

काली देवी का आगे बढ़ना, मुकाबले पर क्रोधपति का आना···

"नकुल ने जो तीन कुंए देखे, वे किस बात के प्रतीक थे ? पहला कुंआ अपने साथ वाले कुंए को पानी नहीं दे रहा था परन्तु दूर वाले को दे रहा था; पास वाला तो सूख ही रहा था। कलियुग के अन्त में लोग अपने निकट सम्बन्धियों, भाई-बान्धवों को नहीं पूछेंगे, न अड़ोसी-पड़ोसी की सहायता करेंगे। वे दूर देश के लोगों से अथवा दूसरी बिरादरी के लोगों से लेन-देन करेंगे और साँठ-गाँठ जोड़ेंगे।"

"पहाड़ से जो पत्थर गिर रहा था, वह धर्म में गिरावट आने का प्रतीक है। धर्म में गिरावट आने से बड़े-बड़े लोगों का पतन हो जाएगा। पत्थर से जो वृक्ष गिर रहे थे, वे लोगों की गिरावट के सूचक थे। अन्त में तृण के साथ लगकर पत्थर का रुक जाना धर्म का गिरते आकर भक्ति पर टिकने का प्रतीक है। कलियुग के अन्त में धर्म हल्की-सल्की भक्ति पर ही टिका होगा।"

इस प्रकार भगवान ने कलियुग के लक्षण बताये जो आज के युग में भी प्रत्यक्ष दिखाई दे रहे हैं। एक रोचक तरीके से सत्य बात बताई गई है। परन्तु इन पाँच आश्चर्यों के अतिरिक्त छठा आश्चर्य यह है कि महाभारत की कथा पढ़ने वाले लोग इनको पढ़ने के बाद भी नहीं समझते कि यह भगवान के अवतरण का समय है। वे कहते हैं कि कलियुग अभी बच्चा है। परन्तु हम देखते हैं कि धर्म रूपी पत्थर भक्ति रूपी तृण पर टिका है।

□□

फरिश्ता

ब्र० कु० पन्नालाल गौहाटी (आसाम)

'अमर' जाते नहीं; उम्र चली जाती है।
शरीर जाता नहीं; रूह चली जाती है॥
वक्त गुजरता नहीं; स्वयं गुजर जाते हैं।
'अमर' पद पाते वही; जो श्रेष्ठ बन जाते हैं॥
शिव बाबा जब आते हैं; ज्ञान अमृत बरसाते हैं।
ज्ञान अमृत जो पीते हैं; तृप्त आत्मा बन जाते हैं॥
शिव बाबा जब जाते हैं; सबको साथ ले जाते हैं।
साथ वही-जाते हैं; जो फरिश्तापन अपनाते हैं॥

सारे जहाँ से अच्छा

(ब्र० कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली)

न कोई प्रशिक्षण, न स्वास्थ्य परीक्षण !
न कोई [1]सम्बल, न कोई चिन्तन !!
हल्के-फुल्के बुद्धि बल पर,
ज्ञान - योग के पँख पसार—
देहों से परे, भौतिक जग से दूर !
अन्तरिक्ष से भी पार—
जाने कितने मस्त फकीर !
नित उड़ - उड़ कर जाते।
परम पिता से मिल कर आते॥
यन्त्र इनका "सी - युअर - सेल्फ",
मन्त्र इनका "रियलाइज युअर सैल्फ",
रूस नहीं, सुप्रीम रूह के,
"टावर-आफ-पीस" से जुड़ करके,
अन्तरिक्ष से भी पार—
जाने कितने मस्त फकीर !
नित उड़ - उड़ कर जाते।
विश्व पिता से मिलन मनाते॥
संकल्प - विकल्प, राग - रंग से विकर्षण
'देह की धरणी' का न 'गुरुत्व-आकर्षण"
न कोई जोखिम जिस पथ पर,
अतीन्द्रिय सुख हर पग पर,
अन्तरिक्ष से भी पार सुनहले जहाँ में—
जाने कितने मस्त फकीर,
नित उड़ - उड़ कर जाते।
परमपिता से मिलन मनाते॥
'बे - गम' पुर, न्यारा, ऊंचा, प्यारा,
सारे जहाँ से अच्छा 'मूलवतन' हमारा,
उसमें फिर दिलबर शिव बाबा,
शान्ति का सागर, सदा सुख दाता,
ज्योति - बिन्दु, सुच्चा औ सच्चा,
वही है सारे जहाँ से अच्छा,
भारत भी सबसे अच्छा।
कभी था और फिर शीघ्र बनेगा
राज यही लेकर आते
सुनहरे उस जहाँ में
नित उड़ - उड़ कर जाते
परमपिता से मिल कर आते

1. सम्बल—राह खर्च का राशन पानी

क्रोधपति—काली···तुम्हारी चाल अब नहीं चलेगी। देखता हूँ तुम कैसे मुझसे बचती हो। हा···हा··· हा···

काली देवी—क्रोध, तुम्हारे अत्याचारों से जन-जीवन अशान्त है। तुम या तो समर्पण कर दो या हथियार उठाओ···

क्रोधपति—समर्पण और तुम्हारे सामने···हँ···हँ··· हँ···

काली देवी—तुम्हारे लाल लाल नेत्र अब सदा के लिए बन्द हो जायेंगे।

क्रोधपति—(ऊपर देखकर)—एँ—तुमको चार भुजाएँ दीखती हैं। तुम मेरी ओर देखो नहीं, मेरा चित्त जलता है। मैं तुम्हारी आँखों में बाण मार दूँगा।

(क्रोध में)···लो···ईर्ष्या का बाण मारता है जो देवी की शुभ भावना की गदा से टकरा कर गिर जाता है।

काली देवी—(मुस्कराती हुई) सम्भलो क्रोधपति··· मैं बाण छोड़ रही हूँ—'आत्मा के स्वधर्म का'—ये लो।

क्रोध पति—(पागल सा)—ओह मेरी छाती में तुम्हारा बाण···

(क्रोध में)—तुम्हारी यह मजाल, अब मैं तुम्हें पर-लोक पहुँचाता हूँ। रोब की गदा उठाता है, परन्तु हाथ से छूट जाती है···यह क्या (आश्चर्य)

काली देवी—सावधान क्रोधपति, अब तुम्हारे अन्तिम क्षण हैं। मेरे साथ ईश्वरीय शक्ति है। बोलो क्या चाहते हो।

क्रोध पति—(क्रोध में झपटता है)—चाहता हूँ तेरे प्राण···

काली देवी—(हाथ ऊपर करते हुए)—ले धूर्त

क्रोध पति—ओह···शक्ति···तुम्हारी सहन शक्ति··· मेरी ओर···भागता है···शक्ति पीछा करती है··· बचाओ···रक्षा करो···मैं मरा। शक्ति से उसके प्राण पखेरू उड़ जाते हैं।

सन्तोषी देवी का आगे बढ़ना, मुकाबले पर लोभाचार्य का आना···

सन्तोषी—तुम्हारे दो साथी मारे गये।

लोभाचार्य—मैं अभी दिखाता हूँ तुम्हें अपने हाथ। मैं बड़े-बड़े तपस्वियों को भी हरा देता हूँ। तुम तो सुकुमार नारी हो।

सन्तोषी—परन्तु भगवान के ज्ञान रत्नों के सुख के समक्ष तुम्हारे सभी खजाने फीके लगेंगे।

लोभाचार्य—एँ···एँ···एँ···परन्तु मेरा बल अधिक है। तुम भी अपनी ताकत आजमा लो।

सन्तोषी—(धनुष पर बाण चढ़ाते हुए)—लो फिर अखुट खजानों का बाण, रोको इसे···

लोभाचार्य—ओहो···सिर पर···सिर झल्ला उठा। (क्रोध में) हीरों की गदा फेंकता है···

सन्तोषी दायें से बायें मुड़ गयी और गदा मिट्टी में गिरी।

सन्तोषी—(मीठी हँसी से)—अब सम्भलो—मेरी ज्ञान गदा—अथाह रत्नों की···गदा फेंकती है।

लोभाचार्य—ओह, मेरी टाँग घायल···गिर जाता है···

(क्रोध में)—अभी मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा, चालाक नारी···उठता है···फिर गिरता है···

सन्तोषी—ये तुम्हारी अन्तिम घड़ी···लो ये अन्तिम बाण वैराग्य का···लोभाचार्य का नीचे गिरना··· आह···मैं मरा···मेरे दोस्तों।

अम्बा देवी का आगे बढ़ना, मोहनाथ का मुकाबले पर आना···

मोहनाथ—सारा संसार मैंने मोह की बन्दरी की तरह बेचैन कर दिया है।

अम्बा—अरे निर्बल मोहनाथ···मैं तो जगत अम्बा हूँ···मुझे सभी से समान प्यार है। अब तुम्हारा प्रभाव खत्म होने वाला है।

मोहनाथ—बकवास बन्द करो अम्बा, हथियार उठाओ···

अम्बा—(धनुष पर बाण चढ़ाते हुए)—ले मोह, देख मेरे हाथ···'मैं-पन के त्याग' का ये अग्नि बाण ···तुम्हारे हृदय को घायल करेगा।

मोहनाथ—ओह कलेजे में मारा दुष्टा, जरा भी प्यार नहीं···अब तुम्हें नहीं छोड़ूँगा, तुम्हारी यह मजाल···

(बाण चढ़ाते हुए)—देख मेरा मोह जाल का बाण···

ये बाण अम्बा की ड्रामा की ढाल से टकरा कर

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

आबू पर्वत—८ अप्रैल प्रातः ७ बजे गुजरात राज्य के मुख्य मंत्री भ्राता माधवसिंह सोलंकी जी ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय में जब पधारे तो भारतवर्ष से आये हुए लगभग एक हजार भाई बहिनों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी, सह प्रशासिका दादी जानकी जी तथा आफीसर इन्चार्ज ब्रह्माकुमार निर्वैर जी ने पाण्डव भवन के मुख्य द्वार पर फूलों द्वारा स्वागत किया। सर्वप्रथम शान्ति स्तम्भ पर ३ मिनट शान्ति का अनुभव करने के बाद राजयोग केन्द्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी मनोहरइन्द्रा जी ने एक घण्टा राजयोग का अभ्यास व्यक्तिगत रूप से कराया। पाण्डव भवन का अवलोकन करने के बाद आपने ओमशान्ति भवन के स्वागत कक्ष में ज्ञान की गहराइयों पर विशेष चर्चा की। तत्पश्चात् आबू शहर में स्थित आध्यात्मिक संग्रहालय का भी अवलोकन किया। तथा वहां पर बने ध्यान कक्ष में भी लगभग १५ मिनट योगाभ्यास किया। भ्राता सोलंकी जी मुख्य मंत्री बनने के बाद प्रथम बार माउण्ट आबू पधारे— अतः यहाँ के गुजराती समाज के प्रमुख तथा अन्य शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ स्नेह मिलन का आयोजन आध्यात्मिक संग्रहालय के प्रवचन हाल में किया गया। उसी दिन शाम को ५.३० बजे ओमशान्ति भवन में सार्वजनिक कार्यक्रम चला जिसमें दादी प्रकाशमणी जी ने अपने स्वागत भाषण में अध्यक्षीय पद से बोलते हुए कहा—कि देश की बिगड़ती हुई स्थिति को राजयोग के माध्यम से ही सुधारा जा सकता है। राजयोग ही मानसिक शान्ति का सहज उपाय है। मुख्य मंत्री जी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए विद्यालय के कार्य विधि की सराहना की।

हरिद्वार—समाचार मिला है कि देहरादून सेवाकेन्द्र की इन्चार्ज ब्रह्माकुमारी प्रेम बहन हरिद्वार के नामीग्रामी धर्मावलम्बियों से व्यक्तिगत मुलाकात करने गईं—सर्वप्रथम आप स्वामी प्रकाशानंद जी से मिली जो कुछ दिन पूर्व माउण्ट आबू होकर गये हैं, उन्होंने बहनों के समक्ष मधुबन की सुन्दर व्यवस्थाओं की अपरम-अपार महिमा की। लगभग १ घण्टे तक मधुबन की ही चर्चा करते रहे। इसके बाद स्वामी सत्यमित्रानंद जी जो कि अभी मौन में हैं और विश्व शान्ति सम्मेलन में आबू आये थे उनसे जब बहनें मिलीं तो वह लिखत रूप में काफी समय तक अनुभव की लेन-देन करते रहे। और ९ मंजिला भारतमाता मन्दिर दिखाने स्वयं ही लेकर चले। मन्दिर दिखाने के पश्चात् आपने अपने मन्दिर में एक शिवबाबा का किरणों वाला ज्योतिबिन्दू का चित्र लगाने का विचार सुनाया। इसके बाद परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष स्वामी धर्मानंद जी से भी बहनों का मिलना हुआ—ज्ञान की गहन चर्चा के पश्चात् आपने भी आबू आने की इच्छा व्यक्त की। यह भी समाचार मिला है कि आर्य समाज की प्रमुख संस्था गुरुकुल विश्व विद्यालय के मेडीकल कालेज में नैरोबी सेवाकेन्द्र की शिक्षिका ब्र० कु० प्रतिमा बहन ने राजयोग पर प्रवचन किया। प्रोफेसर्स तथा स्टूडेन्ट ने काफी प्रश्न उत्तर भी किये। अन्त में सबको राजयोग का अभ्यास भी कराया गया।

काठमाण्डो—समाचार मिला है कि काठमाण्डो में एक नये विश्व शान्ति भवन का शिलान्यास करने के लिए विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी जब काठमाण्डो पधारी तो हवाई अड्डे पर उनका भव्य स्वागत किया गया तथा शाही सम्मान के साथ जब दादी जी सेवाकेन्द्र पर पहुंची तो नेपाल की रसम अनुसार पंच कन्याओं ने आपका स्वागत किया। इस अवसर पर नेपाल के निर्माण तथा यातायात मंत्री डा० डम्बरनारायण यादव जी भी उपस्थित थे। राष्ट्रीय समाचार पत्र के रिपोर्टर तथा गोरखा-पत्र के रिपोर्टर ने दादी जी तथा जयन्ती बहन का इन्टरव्यू लिया। वहाँ के समाचार पत्रों के अलावा आकाशवाणी द्वारा भी सर्व समाचार प्रसारित किये गये। अनेक प्रतिष्ठित दादी जी से मिलने सेवाकेन्द्र पर पधारे जैसे कि—सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस तथा उनकी धर्मपत्नी, भू० पू० प्रधानमंत्री भ्राता डा० तुलसी गिरी। भू० पू० प्रधान मंत्री भ्राता कीर्ति निधि विष्ठ। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश भ्राता वासुदेव शर्मा, गोरखा पत्र के सम्पादक-भ्राता गोकुल प्रसाद पोरेल आदि···ब्र० कु० जयन्ती जी इजिप्ट एम्बेसी, ब्रिटिश एम्बेसी, तथा इंडियन एम्बेसी के

अम्बेस्डर तथा मिनिस्टर से भी मिली। उन्हें योग का अभ्यास भी कराया।

ब्र० कु० जयन्ती बहन की इजिप्ट यात्रा—प्राप्त समाचार के अनुसार लण्डन सेवाकेन्द्र की इन्चार्ज ब्र० कु० जयन्ती बहन भूतपूर्व राष्ट्रपति अनवर सादात की धर्मपत्नी मिसेज सादात के निमन्त्रण पर जब इजिप्ट पहुंचीं तो मिसेज सादात ने वहाँ के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों के समक्ष जयन्ती बहन को "एंजिल लैण्ड का एंजिल" कह मधुर शब्दों में स्वागत किया। राष्ट्रपति भवन में ही लगातार ८ दिन तक विशेष राजयोग और ईश्वरीय ज्ञान की क्लासेज चलती रहीं। शहर के अन्य कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने तथा मिसेज सादात ने राजयोग के गहरे अनुभव किये। जयन्ती बहन ने सभी को ईश्वरीय ज्ञान का साप्ताहिक कोर्स भी कराया। धर्म भेद को समाप्त कर एक सच्चे स्वधर्म के ज्ञान ने सभी को बहुत ही आकर्षित किया। शाकाहारी जीवन व्यतीत करने का वचन देते हुए कई लोगों ने ८५ में आबू पीस कानफ्रेन्स में सम्मिलित होने की शुभेच्छा व्यक्त की।

पुरी—समाचार मिला है कि जगत प्रसिद्ध जगन्नाथ मन्दिर के सम्मुख सिंहद्वार पर आयोजित सप्तद्विवसीय श्रीमद्-भगवत पुराण सतसंग में ब्र० कु० बहनों को प्रवचन करने का निमंत्रण प्राप्त हुआ। २००० प्रभू भक्तों के समक्ष पुरी सेवाकेन्द्र की इन्चार्ज ब्र० कु० निरूपमा बहन ने सत्य पिता का परिचय दिया। इस अवसर पर महामण्डलेश्वर भागवत वित स्वामी कृष्णानंद जी, पदम श्री सदाशिव रथशर्माजी, पण्डित घनश्याम मिश्र जी तथा कई मठाधीश भी उपस्थित थे। इसी प्रकार न्यायविदों की एक कानफ्रेंन्स में भी बहनों को प्रवचन करने का निमन्त्रण प्राप्त हुआ। "विश्व शान्ति में न्यायविदों की महत्वपूर्ण भूमिका" पर प्रकाश डालते हुए बहनों ने बताया कि जब हम आत्मिक लाज़ अथवा गाडली लाज़ को सही रूप से जानेंगे तब लाफुल और पीसफुल वर्ल्ड स्थापन करने में सुप्रीम जस्टिस परमात्मा का सहयोगी बन सकेंगे। इस अवसर पर सारे उड़ीसा से पधारे हुए २०० वकील तथा कई बुद्धिजीवी लोगों को ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से पीस चार्टर भेंट किया गया। सभी ने ईश्वरीय विश्वविद्यालय को स्व-शान्ति तथा विश्व शान्ति संस्था के रूप में स्वीकार किया।

गोरखपुर—समाचार मिला है कि उत्तर प्रदेश के श्रम राज्य मंत्री पर भ्राता सुनिल शास्त्री जी विशेष आमन्त्रण पर सेवाकेन्द्र पधारे। उन्हें ईश्वरीय सहज ज्ञान एवं राजयोग प्रदर्शनी के चित्रों पर विस्तृत समझानी दी गई। जिसे वे बड़ी रुची से श्रवण करते रहे। चित्र, ईश्वरीय साहित्य एवं पत्रिकायें भी भेंट की गईं।

गाजियाबाद— कवीनगर सेवाकेन्द्र की ओर से गाँव-गाँव में शिव दर्शन प्रदर्शनी के आयोजन रखे गये जिसमें डासना, मिर्जापुर, गांव भाटिया, पोर्टीज एवं डी० सी० एम० कालोनी में यह प्रदर्शनी चली।

लखनऊ खुर्शीदबाग—समाचार मिला है कि सीतापुर की बड़ी जेल में जाकर लगभग एक हजार कैदियों के समक्ष आध्यात्मिक प्रवचन का कार्यक्रम चला। जेलर, डिप्टी जेलर आदि ने प्रदर्शनी लगाने का विशेष निमन्त्रण दिया।

कानपुर— नया गंज सेवाकेन्द्र की ओर से प्राप्त समाचार के अनुसार विभिन्न नगरों और ग्रामीणों की ईश्वरीय सेवाएं धूमधाम से चल रही हैं। जिला हरदोई के सकाहा नामक नगर में मन्दिर के प्रांगण में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी आयोजित की गई। जिससे हजारों भक्त आत्माओं को ज्ञान लाभ मिला।

आगरा— समाचार मिला है कि सघन ग्राम सेवा अभियान के अन्तर्गत आगरा क्षेत्र के धाँधऊ ग्राम में एक शिव मन्दिर में प्रतिमा प्रतिष्ठान के अवसर पर वहाँ के ग्राम प्रधान द्वारा आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में ब्र० कु० बहनों को भी आमन्त्रित किया गया। दो दिवसीय कार्यक्रम में प्रदर्शनी एवं प्रवचनों के कार्यक्रम को ५ ग्रामों की हजारों आत्माओं ने देखा सुना एवं लाभ उठाया। अभी वहाँ नियमित रूप से क्लासेज चल रही हैं।

भुवनेश्वर—सेवाकेन्द्र की ओर से राजधानी अस्पताल होमियोपैथिक मेडिकल कालेज तथा उड़ीसा कृषि तकनीकी विश्व विद्यालय के पशु-चिकित्सा महा विद्यालय में तीन चिकित्सक सम्मेलनों तथा विचार गोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिसमें बम्बई के प्रसिद्ध मानसिक रोग विशेषज्ञ ब्र० कु० डा० गिरीश पटेल ने सारगर्भित वक्तव्य दिए।

पूना—सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि पूना रेडियो स्टेशन से ब्र० कु० उर्मिला का "राष्ट्रीय एकात्मता" विषय पर भाषण मराठी में प्रसारण किया गया। इससे अनेक आत्माओं को ईश्वरीय प्रेरणा का शुभ सन्देश मिला।

बम्बई-बोरीवली—समाचार मिला है कि तारापुर एटोमिक पावर स्टेशन में आणविक शक्ति का प्रयोग करने वाले वैज्ञानिकों को आत्मिक शक्ति का अनुभव कराने के लिए राजयोग प्रदर्शनी व राजयोग शिविर का आयोजन किया

गया।

सम्भलपुर— समाचार मिला है कि वरगढ़ गीता पाठशाला का प्रथम वार्षिक उत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। टाऊन हाल में आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वरगढ़ के सब कलेक्टर भ्राता मोहन कुमार मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे।

बांसवाड़ा— ब्र० कु० भावना बहन के विदेश यात्रा से वापस लौटने पर वहाँ की आत्माओं ने बड़े उत्साह पूर्वक स्वागत किया। कई स्थानों पर सम्मान समारोह का आयोजन किया। इससे अनेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश प्राप्त हुआ।

ग्वालियर— सेवा केन्द्र की ओर से दौलागंज रामनारायण धर्मशाला में एक विशाल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। इसका उद्घाटन नगर पालिका पार्षद् द्वारा किया गया।

बरेली— बरेली सेवा केन्द्र की तरफ से काशीपुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन काशीपुर के परगनाधिकारी भ्राता हरीश चन्द्र कर्नाटक जी ने किया। काशीपुर नरेश के सुपुत्र युवराज कुमार कृष्ण चन्द्रसिंह ने भी अपने परिवार सहित आकर प्रदर्शनी देखी।

उमरेड— उमरेड में "मानव जागृति आध्यात्मिक मेला" का आयोजन किया गया। मेले का उद्घाटन भ्राता डी० जी० राम बागकरण जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर शोभा यात्रा भी निकाली गयी। मेले में चैतन्य देवियों की झांकी विशेष शोभायमान हो रही थी। अनेक हज़ार आत्माओं ने मेला देखा और लाभ प्राप्त किया।

पणजी-गोवा— सेवा केन्द्र पर ग्याना से डा० कुमुद बहन, डायना बहन के पधारने पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बहनों के प्रवचन हुए। बहनों से मिलने के लिए लायंस क्लब के सेक्रेटरी आये थे। चीफ़ सेक्रेटरी भ्राता के० के० माथुर जी को भी ईश्वरीय निमंत्रण दिया गया।

भावनगर— सेवा केन्द्र द्वारा कई स्थानों पर ईश्वरीय सेवा का प्रोग्राम रखा गया। एक विशेष "सर्वधर्म साधु संत सम्मेलन" में बहनों का प्रवचन हुआ। भरत नगर, घोघा भावनगर में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

दिल्ली शाहदरा— सेवा केन्द्र के द्वारा राम नवमी और नवरात्रि के उपलक्ष्य में बलवीर नगर सनातन धर्मशाला में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का कार्यक्रम रखा गया। तत्पश्चात् शाम को चैतन्य देवियों की झाँकी सजायी गयी और प्रवचन का प्रोग्राम भी रखा गया।

अहमदाबाद-मणिनगर— सेवा केन्द्र की ओर से सिन्धी समाज की विशेष सेवा की गई, उनके आग्रह पर उनके महोत्सव में दो सुन्दर व आकर्षक झाँकियों को दर्शाया गया। झांकियों को विशेष पुरुस्कार प्राप्त हुए। ये झाँकियाँ "विश्व एकता" और राष्ट्रीय एकता" प्रतीक प्रमाण के थे।

बम्बई-उल्लास नगर— में एक आध्यात्मिक मेला का आयोजन किया गया। इस मेले द्वारा विशेष सिन्धी ससाज की सेवा की गई। उनकी अनेक भ्रान्तियाँ दूर हुईं। मेले के अवसर पर शान्ति यात्रा भी निकाली गयी। मेले द्वारा व्यापारियों, डाक्टरों, वकीलों व शिक्षकों की भी सेवा हुई।

मुजफ्फर नगर— समाचार मिला है कि मुजफ्फर नगर में मुर्द घाट पर देवी का मेला लगता है, वहाँ पर एक विशाल आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें काफी संख्या में लोगों ने परमात्मा शिव का परिचय प्राप्त किया।

सिकन्दराबाद— (उ० प्र०) यहाँ पर होली पर लगने वाले प्रति वर्ष के मेले में ईश्वरीय सन्देश देने के लिए, एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी द्वारा भक्तों को ईश्वरीय सन्देश मिला, और अनेक स्थानों से निमन्त्रण प्राप्त हुआ।

भरूच— समाचार मिला है कि यहाँ पर युवावर्ग की विशेष सेवा की गई। युवावर्ग के बीच "व्यसन मुक्ति" विषय पर प्रवचन हुआ। इसके अलावा महिला संगठन व जेल में कैदी भाइयों के बीच में प्रवचन रखा गया।

ढेंकानाल— सेवा केन्द्र की ओर से हास्पीटल के कम्पाउन्ड में डाक्टरों के लिए एक आध्यात्मिक प्रोग्राम का आयोजन किया गया। डा० गिरीश जी ने राजयोग एक सर्वश्रेष्ठ औषधी— है इस विषय पर प्रवचन किया।

जूनागढ़— सेवाकेन्द्र द्वारा भवन के मुहुर्त पर बहुत ही सुन्दर प्रोग्राम का आयोजन किया गया। आदरणीय दादी जी मधुबन से पधारी, आपने बाबा का झंडा लहराया तथा आये हुए सभी मेहमानों, पत्रकारों को ईश्वरीय सेवा में सहयोगी बनने की प्रेरणा दी।

ग्रीनपार्क— देहली ग्रीनपार्क सेवा केन्द्र की ओर से सेन्ट्रल पार्क ग्रीन पार्क में मानव उत्थान शान्ति मेले का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एक विशाल शोभा

यात्रा निकाली गयी। मानव उत्थान शान्ति मेले का उद्घाटन राजयोगिनी ब्र० कु० चक्रधारी जी ने किया तथा संसद सदस्य श्रीमती प्रमिला चवन एवं देहली नगर निगम की उपाध्यक्षा श्रीमती अंजना कंवर जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। चैतन्य देवियों की झाँकी मेले का मुख्य आकर्षण था।

कानपुर-किदवाई नगर—सेवा केन्द्र द्वारा नवरात्रि पर्व पर बारह देवी प्रांगण में एक लघु मेला प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एक शोभा यात्रा भी निकाली गयी जिसमें फतेहपुर, शिकोहाबाद, बाँदा, हमीरपुर इत्यादि स्थानों से बहनें-भाई पधारे थे।

हरी नगर दिल्ली में मानव कल्याण अर्थ शिलान्यास—२५ मार्च १९८४ को हरी नगर दिल्ली में मानव कल्याण हेतु ली गई भूमि का शिलान्यास अपनी प्यारी दादी जी के कर कमलों से किया गया।

यह शिलान्यास तथा भूमि पूजन एक अनोखे दिव्यता भरे अलौकिक वातावरण के अन्दर अपने ब्राह्मण कुल भूषणों अर्थात सारे भारत और विदेश से आये हुए श्रेष्ठ महारथी शिव शक्ति पाण्डव सेना की शुभ उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

□□

(पृष्ठ २३ का शेष)

आयोजित किये गये। इन सेवाओं में सभी वर्गों का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। परिणामस्वरूप प्रदेश में चारों ओर एक अभूतपूर्व आध्यात्मिक जागृति का सूत्रपात हुआ।

विद्यालय एवं महाविद्यालय की छात्राओं हेतु छात्रावास

विद्यालयों, महाविद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं की आध्यात्मिक उन्नति हेतु श्रीनगर कालोनी, इन्दौर में एक छात्रावास का शुभारम्भ किया गया है। जिसमें विद्या अध्ययन के साथ ही उनका जीवन ईश्वरीय विश्वविद्यालय के नियमानुसार रहेगा।

ओमशान्ति भवन

फरवरी १९७९ में प्रदेश में हुई आध्यात्मिक सेवाओं की दशाब्दी समारोह के उपलक्ष्य में "दिव्य जीवन निर्माण आध्यात्मिक सम्मेलन" का आयोजन एवं एक स्मारिका का विमोचन किया गया था। इस अवसर पर संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि दादी जी का इन्दौर आगमन हुआ था। उस समय उन्होंने यहां पर हो रही ईश्वरीय सेवाओं एवं कार्यक्रमों को देखकर संस्था का अपना भवन निर्माण करने की प्रेरणा दी थी। उनके इस संकल्प को साकार करने के लिए प्रदेश के सभी ब्रह्माकुमार भाइयों एवं ब्रह्माकुमारी बहिनों का प्रयत्न आरम्भ हुआ। उसी के फलस्वरूप इन्दौर में ३१ अगस्त, १९८० को न्यू पलासिया स्थित वर्तमान प्लाट का चयन किया गया तथा नवम्बर १९८१ से निर्माण कार्य आरम्भ हुआ। केवल ढाई वर्ष की अल्पावधि में यह ओमशांति भवन का निर्माण हुआ है।

त्रिकुटि साधन

ब्र० कु० वैद्य—विठ्ठलदेव, आयुर्वेदाचार्य, (शास्त्री) ग्वालियर

दो आँखों के बीच स्थान को, भृकुटि ही तो सब कहते ।।
जानते तीन बिन्दिया उसमें, भृकुटि ही तो तब कहते ।।१।।
आत्मा - परमात्मा - ड्रामा स्मृति, माया जीत बनाती है ।।
आप - बाप - ब्रह्मा की स्मृति, ये सिद्धि स्वरूप बनाती है ।।२।।
अन्तर्मुखि हो बिन्दु त्रिकुट यह, लक्ष्य करे सत् बुद्धि है ।।
भृकुटि में त्रिकुटि की साधना, यही सर्वोत्तम सिद्धि है ।।३।।
नाटक पूर्ण ही कर घर जाना, यही मोक्ष यही मुक्ति है ।।
बिन प्रयास सबको यह मिलती, त्रिकुटि सधे जीवन्मुक्ति है ।।४।।

जगदीश चन्द हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी 9/19 कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा संजीव प्रिंटर्स, महिला कालोनी, गांधीनगर, दिल्ली-३१ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70